रजिस्ट्री सं० डी०—(डीएन)—128/89

REGISTERED No. D—(DN)—128/89

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 14] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 8, 1989 (चैत्र 18, 1911)
No. 14] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 8, 1989 (CHAITRA 18, 1911)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—रक्षा मंत्रालय को छोड़कर भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधिसर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	313
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	345
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	*
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों, आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	469
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii) भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	293
भाग III—खण्ड 2—पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	351
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	377
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी, निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	41
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई है।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	313
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	345
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	469
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	293
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	351
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	377
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	41
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folio Nos. not received.

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1989

सं० 22-प्रेज०-89—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्ति को उसकी उत्कृष्ट वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कैप्टन प्रताप सिंह (एस० एस०-31468) (मरणोपरान्त)
आर्टीलरी
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 26 मई, 1988)

कैप्टन प्रताप सिंह अप्रैल, 1988 में सियाचिन क्षेत्र में प्रेषण चौकी अफसर के रूप में तैनात किए गए। शत्रु ने सियाचिन में हमारी रक्षा के लिए महत्वपूर्ण चौकी पर फिर से कब्जा करने के लिए लगातार हमले किए, परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। शत्रु ने इस महत्वपूर्ण चौकी पर कब्जा करने की आखिरी कोशिश 9 मई, 1988 को की, जब उन्होंने इस उद्देश्य से चौकी के नीचे बर्फ की दीवार पर चार रस्सियां और एक सीढ़ी लगा दी। यह हमला भी हमारी टुकड़ियों ने पूरा नाकाम कर दिया। शत्रु द्वारा लगाई गई रस्सियों और सीढ़ी उसी हालत में लगी रहीं जिसका प्रयोग शत्रु चौकी को हथियाने के लिए फिर से कर सकता था। नए हमलों को रोकने के लिए बांधी गई रस्सियों को काटना और सीढ़ी को हटाना बहुत जरूरी था।

2. 18 मई, 1988 को सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी वहां तक पहुंच कर चार में से दो रस्सियों को काटने में सफल हो गए। 26 मई, 1988 को तय किया गया कि बंधी हुई बाकी दोनों रस्सियों को भी काट कर सीढ़ी को हटाया जाए। कैप्टन प्रताप सिंह ने एक जवान को साथ लेकर इस कार्य का बीड़ा लिया और बर्फ की दीवार से नीचे उतर गए। नीचे पहुंच कर कैप्टन प्रताप सिंह ने पाया कि रस्सियों के सिरे के पास बहुत सा गोला-बारूद और ग्रिनेड पड़े हैं। जब वे इनकी जांच कर रहे थे तब शत्रु का एक ग्रिनेड बूबी ट्रैप फट गया जिससे कैप्टन प्रताप सिंह का दायां बाजू और छाती बुरी तरह से जख्मी हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, यह वीर अफसर कुहनियों के बल जमीन पर रेंगते हुए बंधी हुई रस्सियों की तरफ बढ़ा तथा उन्हें चाकू से काट दिया। इसके बाद इन्होंने सीढ़ी को खोला और इसे बर्फ की दीवार से नीचे गिरा दिया। उसके बाद, यह साहसी अफसर अपनी चौकी पर वापस आने के लिए अपनी रस्सी के सहारे इंच-इंच करके बर्फ की दीवार पर चढ़ने लगा, परन्तु गंभीर घावों के कारण नीचे गिर पड़ा और इस तरह देश के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

3. इस प्रकार कैप्टन प्रताप सिंह ने अपनी जान की बाजी लगाकर सियाचिन में हमारी मोर्चाबंदी की एक महत्वपूर्ण चौकी पर से गंभीर खतरे को टालने में उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया।

सं० 23 प्रेज०-89—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. फ्लाइट लेफ्टिनेंट अब्दुल नासिर हुन्फी (16077),
उड़ान (पायलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 23 सितम्बर, 1987)

23 सितम्बर, 1987 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट अब्दुल नासिर हुन्फी को सियाचिन क्षेत्र में सेना को सहायता पहुंचाने के काम पर लगाया गया। थोड़े समय में ही उड़ान भर कर उन्होंने उस क्षेत्र में सेना को सहायता देने का बेहद जरूरी कार्य संभाला। जिस समय हमारी सभी अग्रिम चौकियों पर दुश्मन हमला कर रहा था और बारूद तथा अन्य संभारिकी सहायता की आवश्यकता थी, फ्लाइट लेफ्टिनेंट हुन्फी आगे आए और चुनौती स्वीकार की। खराब मौसम, लगातार चलने वाले बर्फानी अंधड़ और चकाचौंध भरे माहौल में दुश्मन चौकियों पर लगातार फायर कर रहा था। इस दौरान उन्होंने अपनी जान की जरा भी परवाह किए बिना सुबह से शाम तक तीन दिन तक लगातार 14 से 15 उड़ानें प्रतिदिन भरीं। उन्होंने अकेले ही दो दिन के लिए बेहद जरूरी संभारिकी सहायता जुटाने का कार्य किया इससे सियाचिन ग्लेशियर क्षेत्र में लड़ रहे हमारे सैनिक दस्तों का मनोबल ऊंचा करने में बड़ी मदद मिली, जो बेहद प्रतिकूल इलाके में दुश्मन से लड़ रहे थे।

एक प्रतिबंधित क्षेत्र में जहां शत्रु की चुनौती का मुकाबला करने के लिए गनों से निरंतर फायर करना पड़ रहा था, इन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक ही दिन में 38 हताहतों की निकासी करके असाधारण कोटि की व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट अब्दुल नासिर हुन्फी ने इस प्रकार शत्रु से मुकाबले में उच्च कोटि की व्यावसायिक दक्षता और साहस का परिचय दिया।

2. 5345531 राइफलमैन संजीव गुरुंग (मरणोपरान्त)
4 गोरखा राइफल्स,
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 23 सितम्बर, 1987)

12 सितम्बर, 1987 को राइफलमैन संजीव गुरुंग को सियाचिन ग्लेशियर के बिलाफोंडला क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण चौकी पर उनकी प्लाटून के एक अंग के रूप में तैनात किया गया। 23-24 सितम्बर 1987 की रात को शत्रु ने उनकी चौकी पर जबरदस्त हमला किया। इससे पहले उसने तोपों और मार्टरों से इस चौकी पर भारी फायर कर डाला। राइफलमैन संजीव गुरुंग और उनके साथियों ने डटकर मुकाबला किया और दुश्मन को पीछे धकेल दिया।

24-25 सितम्बर 1987 की रात को शत्रु ने उनकी चौकी पर दुबारा पक्के इरादे से हमला किया। राइफलमैन संजीव गुरुंग तथा उनके साथियों ने जमकर टक्कर ली और दुश्मन को खदेड़ दिया। लगभग 0215 बजे शत्रु ने इस चौकी पर फिर हमला किया। घमासान युद्ध के दौरान राइफलमैन संजीव गुरुंग की गोलियां समाप्त हो गई। जब वह अपनी मैगजीनें भरने में लगे थे, उन्होंने देखा कि शत्रु के दो सिपाही ऊपर चढ़ने में सफल हो गए हैं और उनकी ओर बढ़ रहे हैं। अपने को संयत रखते हुए राइफलमैन संजीव गुरुंग ने साथ पड़े एक खाली जेरीकैन को उठाकर आगे बढ़ते हुए शत्रु पर फैंक मारा। जब उन्होंने देखा कि इससे शत्रु के सैनिक आगे बढ़ने में कुछ डगमगा गए हैं तो वे अपनी खाली राइफल लेकर उन पर टूट पड़े और राइफल के कुन्दे से दुश्मन के एक सैनिक को मारने में सफल हो गए। इस दौरान दूसरे शत्रु सैनिक ने उनकी पीठ में गोली मार दी जिससे राइफलमैन गुरुंग घातक रूप से घायल हो गए और थोड़ी देर बाद ही उन्होंने दम तोड़ दिया। उनकी इस बहादुरी ने शत्रु को आगे बढ़ने से रोका और उनके बढ़ने की रफ्तार को तोड़ दिया।

राइफलमैन संजीव गुरुंग ने इस प्रकार असाधारण कोटि के साहस और शौर्य का परिचय दिया तथा भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप सर्वोच्च बलिदान दिया।

3. सैकिंड लेफ्टिनेंट राजिन्दर सिंह नागर (आई० सी०—43836)
16 सिख (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 17 अक्तूबर, 1987)

सैकिंड लेफ्टिनेंट राजिन्दर सिंह नागर को श्रीलंका में भारतीय शान्ति सेना के भाग के रूप में तैनात किया गया था। जाफना किले के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिए उनकी बटालियन ने 17 अक्तूबर, 1987 को सड़क के रास्ते प्रस्थान किया। रास्ते में, मणिपे की ओर से विद्रोहियों ने उन पर भारी गोलाबारी की। उनकी पूरी बटालियन को नाकाम कर दिया गया। ऐसी परिस्थितियों में सैकिंड लेफ्टिनेंट राजिन्दर सिंह नागर ने पहल की और अपने जवानों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा सभी संकटों का सामना करते हुए खुद दस्ते के आगे-आगे चले। उन्होंने उस भारी मशीन गन की चौकी को ढूंढ निकाला जहां से धुंआ-धार गोलाबारी हो रही थी। उन्होंने विद्रोहियों की भारी मशीनगन की चौकी पर हथगोला फेंका और पहला हथगोला फटने पर वे सीधे रहे और चौकी पर खुद आक्रमण किया। विद्रोहियों ने पास से निशाना साधकर इस वीर युवा सैनिक को गोली मार दी।

इस युवा अफसर द्वारा दिखाए गए साहस ने पूरी बटालियन में लड़ाई का जोश भर दिया। बटालियन ने मुंह नहीं मोड़ा, और सौंपे गए सभी कार्य पूरे किए, तथा वह 41वीं ब्रिगेड की ऐसी गिनी-चुनी बटालियनों में से पहली थी जिन्होंने जाफना किले में पहुंच कर अगले कार्य पूरे किए।

इस प्रकार सैकिंड लेफ्टिनेंट राजिन्दर सिंह नागर ने विद्रोहियों के साथ संघर्ष में साहस और वीरता का परिचय देते हुए सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

4. मेजर रत्नेश कुमार चतुर्वेदी (आई० सी०—34499)
5 राजपूताना राइफल्स (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 अक्तूबर, 1987)

18 अक्तूबर, 1987 को 5 राजपूताना राइफल्स को जाफना किले में एक मराठा लाइट इन्फैंट्री के साथ जा मिलने का काम सौंपा गया। जिस समय यह दल 1 मराठा लाइट इन्फैंट्री के साथ मिलने ही वाला था, उस समय विद्रोहियों ने इस पर भारी मशीन गनों और हल्की मशीन गनों से गोलाबारी करके इसका आगे बढ़ना रोक दिया। इस दल के आगे चलने वाली एक कम्पनी ने मोर्चा संभालते हुए जवाबी गोलीबारी की। विद्रोहियों की गोलाबारी में कोई कमी नहीं हो रही थी। समय निकलता जा रहा था और गोला-बारूद कम होता जा रहा था। अतः मेजर रत्नेश कुमार चतुर्वेदी ने अपनी कम्पनी का स्वयं नेतृत्व करते हुए विद्रोहियों की गन पोजीशन पर धावा बोल दिया। धावा बोलते समय उनके सीने पर गोलियों की बौछार लगी।

बहते खून और जान की परवाह न करते हुए, मेजर चतुर्वेदी विद्रोहियों की भारी मशीन गन की तरफ बढ़ते रहे और अपने जवानों को विद्रोहियों की चौकी की ओर तेजी से बढ़ने के लिए उत्साहित करते रहे। विद्रोही अपनी चौकी से जान बचा कर भाग खड़े हुए। कम्पनी भागते हुए विद्रोहियों पर गोलाबारी करती रही और छः विद्रोही मारे गए जिन से दो मेजर चतुर्वेदी के हाथों मरे। गम्भीर चोटों के बावजूद, उन्होंने वहां से हटने से मना कर दिया। लेकिन गंभीर घावों और खून बहने के कारण, वे बेहोश हो गए और उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु कंपनियों ने अन्ततः 1 मराठा लाइट इन्फैंट्री के साथ जा मिलने का काम समय पर पूरा कर लिया।

इस प्रकार मेजर रत्नेश कुमार चतुर्वेदी ने विद्रोहियों के साथ संघर्ष में उत्कृष्ट साहस और वीरतापूर्ण नेतृत्व का परिचय दिया।

5. विंग कमांडर चन्द्र दत्त उपाध्याय (11336)
उड़ान (पायलट)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 अक्तूबर, 1987)

विंग कमांडर चन्द्र दत्त उपाध्याय को 19 अक्तूबर 1987 से 3 नवम्बर, 1987 तक श्रीलंका में कार्रवाई कर रही भारतीय शान्ति सेना के अंग के रूप में भारतीय वायु सेना के प्रनाप बेड़े का "टास्क फोर्स कमांडर" तैनात किया गया। उन दिनों भारतीय शान्ति सेना जाफना शहर को विद्रोहियों से लेने के लिए भीषण युद्ध में फंसी थी।

19 अक्तूबर, 1987 को और फिर अक्तूबर, 1987 को, विंग कमांडर उपाध्याय ने आगे बढ़ रहे अपने सैन्य दलों को आवश्यक राशन, पैट्रोल, तेल और गोलाबारूद पहुंचाने तथा हताहतों की निकासी के लिए उड़ानें भरी। उन्होंने यह काम एक ऐसे खुले मैदान में हेलीकोप्टर उतार कर पूरा किया जिस पर दुश्मन चौतरफा फायर डाल रहा था।

21 अक्तूबर, 1987 को पैरा कमांडो टुकड़ी को एक हेलीकाप्टर से अचुवेल में उतारा गया और उसके बाद पैरा कमांडो और कैदियों को पुत्तूर पश्चिम से उठाया गया। पुत्तूर पश्चिम से उड़ान भरते समय विद्रोहियों ने उनके हेलीकाप्टर पर मशीनगनों तथा राकेटों से फायर डाला। एक राकेट की मार से रोटर ब्लेड का पिछला किनारा क्षतिग्रस्त हो गया, जिससे हेलीकाप्टर बुरी तरह से डगमगाने लगा और अनियंत्रित होकर तेजी से नीचे की ओर उतरने लगा। विंग कमांडर उपाध्याय ने उच्च कोटि की व्यावसायिक दक्षता का परिचय देते हुए क्षतिग्रस्त हेलीकाप्टर को जमीन से कुछ ही फुट ऊपर नियंत्रण में लाकर वापस मोड़ा और उसी मैदान में उतारा, जहां से वे उड़े थे। सभी यात्रियों और वायु कर्मियों ने खाइयों में शरण ली। जब दोनों तरफ का फायर कुछ रुका तो उन्होंने हेलीकाप्टर का निरीक्षण किया। क्षति बहुत मामूली थी, इसलिए उन्होंने हेलीकाप्टर को फिर से चालू किया, यात्रियों को उसमें बिठाया तथा उसे धीरे-धीरे उड़ा कर वापिस हवाई अड्डे पर ले आए। इस तरह उन्होंने कीमती जानों और हेलीकाप्टर को बचा लिया।

विंग कमांडर चन्द्र दत्त उपाध्याय ने इस प्रकार श्री लंका में विद्रोहियों से मुकाबले में असाधारण कोटि की व्यावसायिक दक्षता, कर्तव्य-निष्ठा तथा साहस का परिचय दिया।

6. जे० सी०—149484 नायब सूबेदार खुशी राम (मरणोपरान्त)
16 कुमाऊं
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 जनवरी, 1988)

25 जनवरी 1988 को नायब सूबेदार खुशी राम को उनकी प्लाटून के साथ श्रीलंका के वालवेनाई सेक्टर में मुरुक्कंदीवू क्षेत्र में आतंकवादियों की तलाशी लेने और उनके अड्डे नष्ट करने का कार्य करने के लिए तैनात किया गया था। नायब सूबेदार खुशी राम ने उल्लेखनीय साहस और धैर्य दिखाते हुए एक सीधा प्रहार किया जिससे आतंकवादियों की मीडियम गन की गोलाबारी बंद हो गई। उच्च विस्फोटक गोलाबारी के प्रभाव के कारण तोपों के अवस्थान से तीन आतंकवादी बाहर फेंक दिए गए जबकि दो बच कर भागते हुए दिखाई दिए। उसके बाद उक्त जूनियर कमीशन अफसर ने अपनी सैन्य टुकड़ी से उस स्थान को घेरने का आदेश दिया और नायक दयाराम को साथ लेकर स्वयं उस मीडियम मशीनगन पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़े।

निर्भीक और बहादुर जूनियर कमीशन अफसर छोड़ी हुई मीडियम मशीनगन से 50 मीटर की दूरी तक पहुंच चुके थे कि इस बीच में उनके सीने में स्वचालित राइफल की गोली आ लगी और वह घातक रूप से जख्मी हो गए।

इस प्रकार नायब सूबेदार खुशी राम ने आतंकवादियों के सामने उत्कृष्ट साहस और बहादुरी दिखाई और सेना की उच्चतम परम्परा में सर्वोत्कृष्ट बलिदान दिया।

7. कैप्टन जयदीप सेनगुप्ता (आई० सी०–41508),
9 पैरा कमांडो,
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 फरवरी, 1988)

5 फरवरी 1988 को तुन्नुक्काई क्षेत्र में सैन्य कार्रवाई के दौरान क्वार 3 प्रहार सैन्य टुकड़ी के सैन्य टुकड़ी कमांडर कैप्टन जयदीप सेनगुप्ता ने तुन्नुक्काई मान-कुलेम रोड़ पर उग्रवादियों की तलाशी लेने और उनके ठिकाने नष्ट करने का कार्य सौंपा गया था। आतंकवादियों की भारी स्वचालित गोलाबारी के बावजूद ये पांच व्यक्तियों की एक छोटी सी टुकड़ी को साथ लेकर आतंकवादियों को हतप्रभ करते हुए सफलतापूर्वक आगे बढ़े। इस दौरान इनके पेट, सीने और जांघ में स्वचालित राइफल की गोली लगने व ग्रेनेड के फटने से ये बुरी तरह घायल हो गए।

इन जख्मों की ओर अत्यधिक खून बह जाने की परवाह न करते हुए इन्होंने आतंकवादियों पर लगातार दबाव बनाए रखा, उन पर गोलियां बरसाते हुए उन्हें चुप कराया और साथ ही उनके ठिकाने के पीछे पांच व्यक्तियों का एक और स्क्वाड लगा दिया। आतंकवादियों द्वारा अपने मृत साथियों को छोड़कर वहां से भाग जाने के बाद ही, कैप्टन सेनगुप्ता ने अपने आपको वहां से हटाने दिया।

इस प्रकार कैप्टन जयदीप सेनगुप्ता ने उग्रवादियों का सामना करते हुए उत्कृष्ट साहस, बहादुरी एवं अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

8. 5043176 राइफलमैन राजेन्द्र बहादुर थापा,
1 गोरखा राइफल्स
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 16 मार्च, 1988)

16-17 मार्च 1988 की रात को राइफलमैन राजेन्द्र बहादुर थापा उस कृतिक बल का एक सदस्य था जिसे श्रीलंका में वेल्लनकुलम की पूर्व दिशा में करीब एक मील की दूरी पर पन्नई गांव की घेराबंदी करने और तलाशी लेने का काम सौंपा गया था।

यद्यपि ये सशस्त्र आतंकवादियों द्वारा बुरी तरह से घेर लिए गए थे और वे इनके ठिकाने पर लगातार गोलाबारी कर रहे थे फिर भी राइफलमैन थापा निर्भीक रहे और उन सबको अकेले ही 17 घंटे तक आगे नहीं बढ़ने दिया। ऐसी भीषण गोलाबारी में राइफलमैन थापा ने दो कट्टर आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा और कई अन्य को जख्मी कर दिया।

इस प्रकार राइफलमैन राजेन्द्र बहादुर थापा ने उग्रवादियों के साथ संघर्ष में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

9. लेफ्टिनेंट कर्नल अबजीत सिंह सेखों (मरणोपरान्त)
(आई० सी०–23970)
7 मद्रास
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 13 अप्रैल, 1988)

लेफ्टिनेंट कर्नल अबजीत सिंह सेखों को श्रीलंका में भारतीय शांति सेना के एक बटालियन के कमांडिंग अफसर के रूप में तैनात किया गया। 13 अप्रैल, 1988 को अम्बेरीकुलम नामक जगह पर शस्त्रों के गुप्त भण्डार और कुछ कट्टर उग्रवादियों के छिपे होने की सूचना मिलने पर, उन्होंने अच्छी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए, अज्ञात और इस्तेमाल न किए गए रास्तों से गाड़ियों में उन क्षेत्रों तक पहुंचने का जोखिम उठाने का निश्चय किया। उग्रवादियों को पता लगे बगैर वे अपने लक्ष्य क्षेत्रों तक पहुंचे और उन्होंने विद्रोहियों को पूरी तरह से हतप्रभ कर दिया। इस कार्रवाई से लेफ्टिनेंट कर्नल अबजीत सिंह सेखों ने जो दस्ते का नेतृत्व कर रहे थे, दो कट्टर विद्रोहियों को मार डाला जिनमें से एक उस इलाके का नेता निकला।

दुबारा 21 अप्रैल, 1988 को जब यह सूचना मिली कि उरिथिरापुरम गांव में 10–14 विद्रोही छिपे हुए हैं, तब उन्होंने दो प्लाटूनों को एकत्र किया और एक अन्य अफसर को साथ लेकर, विद्रोहियों के ठिकाने तक दस्ते का स्वयं नेतृत्व किया। विद्रोहियों ने दस्ते पर भारी गोलाबारी की। वे गाड़ी से नीचे कूदे और विद्रोहियों की भारी गोलाबारी की परवाह न करते हुए, उन्होंने अपने दल को संगठित करके जवाबी गोलाबारी शुरू की। उन्होंने स्वयं एक विद्रोही को मार गिराया और एक को घायल कर दिया। मुकाबले के दौरान, इसी समय लेफ्टिनेंट कर्नल अबजीत सिंह सेखों के सीने में एक विद्रोही की गोली लगी और वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्रवाई के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल अबजीत सिंह सेखों ने विद्रोहियों के साथ संघर्ष में शौर्य तथा बहादुरी का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

10. सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी (आई० सी० 44694)
सेना सेवा कोर,
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 मई, 1988)

सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी ने 15 मई, 1988 को सियाचिन ग्लेशियर के बिलाफोन्डला परिसर में एक महत्वपूर्ण चौकी कमांडर का कार्यभार संभाला। चौकी पर वापिस कब्जा करने के अपने अंतिम प्रयास में, शत्रु ने 9 मई, 1988 को बर्फ की दीवार पर चार रस्सी की सीढ़ियां गाड़ दीं। हमारे वीर जवानों ने इस आक्रमण को सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया। लेकिन रस्सी की सीढ़ियां अपने स्थान पर लगी रहीं। इन्हें चौकी पर कब्जा करने के किसी नए प्रयास के दौरान इस्तेमाल किया जा सकता था।

13 मई, 1988 को खराब मौसम के बावजूद, बर्फ की अगली दीवार से नीचे उतर कर वहां गाड़ी गई रस्सियों को काटने का निर्णय किया गया।

सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी, राइफलमैन कुंवर सिंह के साथ 400 फुट गहरी बर्फ की सीधी दीवार से खिसक गए और बर्फ की दीवार पर रस्सियों का पता लगाने के लिए तेजी के साथ आगे बढ़े। सैकिंड लेफ्टिनेंट चौधरी को वे दुफन्दी रस्सी से लटकती हुई दिखाई पड़ीं। उन्होंने अपने चाकू से एक रस्सी को काटा। मौसम तेजी से साफ हो रहा था और अगली ढलान पर शत्रु की प्रेक्षण चौकी द्वारा इस दल के देख लिए जाने की आशंका थी। अपने ऊपर गोली चलने का खतरा होने के बावजूद इस अफसर ने बढ़कर दूसरी रस्सी को काट दिया। सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी ने दोनों रस्सियों को काट कर शत्रु के अचानक आक्रमण की संभावना को समाप्तप्राय कर दिया।

इस प्रकार सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी ने शत्रु का सामना करते हुए उत्कृष्ट साहस और वीरता का परिचय दिया।

11. 4068303 राइफलमैन कुंवर सिंह,
14 गढ़वाल राइफल्स,
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 18 मई, 1988)

शत्रु ने सियाचिन ग्लेशियर के बिलाफोंडला दर्रे की एक महत्वपूर्ण चौकी पर वापिस कब्जा करने के लिए कई असफल प्रयास किए। अन्तिम प्रयास उन्होंने 9 मई, 1988 को किया, जिसके दौरान उन्होंने चौकी के नीचे बर्फ की दीवार पर चार रस्सियों की सीढ़ी बांध दी। हमारी सेनाओं ने यह हमला भी सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया परन्तु शत्रु द्वारा बांधी गई रस्सियों की सीढ़ी इसी तरह लगी रही, जिसके कारण शत्रु चौकी पर कब्जा करने का फिर से प्रयास कर सकता था। 13 मई, 1988 को फैसला किया गया कि बर्फ की दीवार पर लटकती हुई रसिस्यों को काट दिया जाए। राइफलमैन कुंवर सिंह ने सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी के साथ मिल कर बर्फ की दीवार पर लटक कर रस्सियों को काटने के जोखिम भरे काम का बीड़ा उठाया। राइफलमैन कुंवर सिंह ने अपने पांव बर्फ की दीवार पर टिकाए और सैकिंड लेफ्टिनेंट अशोक चौधरी को दुफंदी बांध लगाकर रस्सी काटने के योग्य बना दिया। शत्रु की ओर से फायर के खतरे की परवाह न करते हुए यह बहादुर जवान लंगर थामे रहा तथा अफसर को दुफंदी बांध लगा कर दूसरी रस्सी काटने में सहायता दी।

26 मई, 1988 को बाकी रस्सियों को काटने का निर्णय किया गया। राइफलमैन कुंवर सिंह कैप्टन प्रताप सिंह के साथ इस काम को करने के लिए आगे आए। राइफलमैन कुंवर सिंह लंगर डालकर लटक गया और प्रताप सिंह को कुफंदी बांध कर पकड़े रहा ताकि वे रस्सियों को काट कर सीढ़ी को हटा सकें। रस्से काटने के दौरान कैप्टन प्रताप सिंह बुरी तरह से घायल हो गए और रस्सियों से लटकते हुए ही उन्होंने दम तोड़ दिया। अपने नेता की मौत से विचलित न होते हुए राइफलमैन कुंवर सिंह के शव को रस्सियों से बांध कर वापिस चौकी तक सुरक्षित पहुंचाने का जोखिम भरा काम पूरा किया।

राइफलमैन कुंवर सिंह ने इस प्रकार संकट के समय उत्कृष्ट साहस तथा वीरता का परिचय दिया।

12. फ्लाइट लेफ्टिनेंट निकोडेमस मनोहर सैमुअल (17449)
उड़ान (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 जून, 1988)

22 जून, 1988 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट निकोडेमस मनोहर सैमुअल को श्री लंका के मुलैटिनू के अत्यन्त दुर्गम और घने जंगलों से भरे क्षेत्र में एक विशेष कार्य के लिए तैनात किया गया इसमें उन्हें भारतीय शान्ति सेना के टोही दल को विच करके निकलना था। इस संक्रिया में एक ऐसे क्षेत्र के ऊपर बने रहना जरूरी था जिसमें कट्टर उग्रवादियों के छिपे होने की आशंका थी। इस मिशन को पूरा करने के दौरान आसपास के क्षेत्र से उनके हेलीकाप्टर पर भारी जमीनी फायर होने लगी। परन्तु अटूट कर्तव्य निष्ठा के साथ अपनी जान की परवाह न करते हुए फ्लाइट लेफ्टिनेंट सैमुअल तब तक ऊपर मंडराते रहे जब तक टोही दल को विच द्वारा सकुशल न उठा लिया गया। जमीनी फायर से हेलीकाप्टर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और उसमें सवार कर्मीदल के कुछ सदस्य और जवान घायल हो गए। भारी जमीनी फायर के बावजूद फ्लाइट लेफ्टिनेंट सैमुअल संयत रहे और अपने हेलीकाप्टर को क्षतिग्रस्त अवस्था में ही अपने मिशन के पूरा होने तक उड़ाते रहे। हेलीकाप्टर को हुई क्षति का सही मूल्यांकन और उस अपंग मशीन को उड़ा कर नजदीकी हेलीपैड पर सुरक्षित पहुंचाने की कार्रवाई में उन्होंने अत्युत्तम वायुदक्षता का परिचय दिया। इस तरह उन्होंने अपने हेलीकाप्टर को न केवल और अधिक क्षतिग्रस्त होने से बचाया, बल्कि घायल जवानों/कर्मीदल को तुरंत चिकित्सा सहायता दिलाने में भी मदद की।

इस पूरी कार्रवाई में फ्लाइट लेफ्टिनेंट निकोडेमस मनोहर सैमुअल ने उग्रवादियों के बीच अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिलकुल परवाह न करते हुए उच्च कोटि के साहस और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

सं० 24-प्रेज/89—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी उत्कृष्ट वीरता के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. 1553695-एन सैपर, (मरणोपरान्त)
ओ० ई० एम० अजमेर अली

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 मार्च, 1987)

15 से 17 मार्च, 1987 के बीच हुए लगातार भारी हिमपात से, लद्दाख में लेह खार्दुंगला मार्ग पर 18,000 फुट की ऊंचाई पर खारदुंगला दर्रा बन्द हो गया। 22 मार्च, 1987 को सैपर उत्खनक मशीन आपरेटर अजमेर अली 168 एफ० सी० पी० केयर 113 आर०सी०सी०, सीमा सड़क संगठन, को बर्फ साफ करने का काम सौंपा गया। आसमान बादलों से घिरा था और बर्फ लगातार गिर रही थी। शून्य से भी कम तापमान और विरमित मौसम तथा बर्फीली हवाओं वाली बहुत कठोर स्थिति का सामना करते हुए, सैपर ओ० ई० एम० अजमेर अली ग्लेशियर पुल के आर-पार, मुख्य संचार मार्ग को साफ करने के महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने में अत्यधिक लगन से लगातार जुटे रहे ताकि उत्तर की ओर से सैनिक दस्तों को आवश्यक मदद और परिभारिकी सहायता मिल सके। लगातार हिमपात होने से, उनके साथ काम कर रहे मजदूर अपनी जान को खतरा समझ कर उस स्थान को छोड़कर चले गए। किन्तु यह साहसी आपरेटर इस पर भी विचलित न हुआ और अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अत्यंत उत्साह और धैर्य से काम करता रहा। इस तरह उन्होंने अडिग कर्तव्यनिष्ठा और अनुकरणीय कर्मशीलता का परिचय दिया। इस कार्य के दौरान एक हिमस्खलन में वे अपने डोजर के साथ ही बर्फ में दब गए।

सैपर, ओ० ई० एम० अजमेर अली ने प्रतिकूल और अत्यंत कठिन परिस्थितियों में प्रशंसनीय दृढ़ता और असाधारण साहस का परिचय दिया।

2. श्री फू दोरजी (मरणोपरान्त)
मैसर, कर्नाटका

श्री फू दोरजी 1986 में बिना कृत्रिम आक्सीजन के एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने वाले पहले भारतीय थे। एवरेस्ट के अतिरिक्त भारत की कई अन्य पर्वत चोटियों पर भी उन्होंने चढ़ाई की थी। वे जनवरी, 1987 और मई, 1687 के बीच आयोजित असम राइफल्स कंचनजंगा अभियान में स्वेच्छा से भाग लेने के लिए आगे आए। उनके नेतृत्व में शिखर दल ने कंचनजंगा की चोटी पर उसके उत्तर-पूर्वी पर्वत प्रक्षेप की तरफ से चढ़ने का बीड़ा उठाया। कंचनजंगा भारत की उच्चतम और विश्व की तीसरी सबसे ऊंची पर्वत चोटी है और इसका उत्तर-पूर्वी पर्वत प्रक्षेप विश्व के सर्वाधिक दुष्कर चढ़ाइयों में से एक माना जाता है और एवरेस्ट की चोटी की चढ़ाई से भी खराब है। भीषण मौसम की सभी विषमताओं, बर्फीले तूफानों और बार-बार होने वाले हिमस्खलनों के बावजूद श्री दोरजी के नेतृत्व में तीन सदस्यों के प्रथम शिखर दल ने 24 मई, 1987 को चोटी पर चढ़ने का प्रयास किया। परन्तु उनके दल और बेस कैम्प के बीच रेडियो संपर्क टूट गया। इस कारण उनके कंचनजंगा की चोटी पर आरोहण का पता तभी लग पाया, जब दूसरे पर्वतारोही दल ने उनकी प्रार्थना पताकाओं को शिखर से केवल 25 फुट नीचे गड़ा पाया। शायद 24 या 25 मई, 1987 को दोरजी और उनके दल के अन्य सदस्य भयंकर बर्फीले तूफान में उड़ गए और बर्फ के नीचे दबकर मौत की नींद में सो गए।

श्री फू दोरजी ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ संकल्प और व्यावसायिक दक्षता और सबसे बढ़कर पर्वतारोहण के प्रति असाधारण निष्ठा का परिचय दिया। कृत्रिम आक्सीजन का इस्तेमाल किए बिना एवरेस्ट और कंचनजंगा पर चढ़ना पर्वतारोहण के इतिहास में उन्हें अग्रदूत बनाता है।

3. 1164034 कार्यकारी लांस दफादार कृष्ण देव कुशवाहा
आर्मर्ड कोर (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 26 जुलाई, 1987)

26 जुलाई, 1987 को सैनिक अस्पताल बबीना के बाल चिकित्सक मेजर अरविन्द गुप्ता को सैनिक अस्पताल, झांसी ले जाने और वापिस लाने के लिए कार्यकारी लांस दफादार कृष्ण देव कुशवाहा को जोंगा के ड्राइवर के रूप में तैनात किया गया। लौटते समय लगभग रात के 11 बजे वीरान सड़क पर गाड़ी का अगला बायां पहिया पंक्चर हो गया। उस घुप अंधेरे में, अफसर और कार्यकारी लांस दफादार कृष्ण देव कुशवाहा दोनों पंक्चर पहिए को बदलने के लिए जोंगा से उतरे। जब वे पंक्चर पहिए तथा औजारों को गाड़ी में रख रहे थे तभी लोहे की छड़ और देसी पिस्तौल से लैस 5 डकैत दिखाई दिए और उन पर टूट पड़े। मेजर अरविन्द गुप्ता के सिर पर लोहे की छड़ का वार हुआ और वे जमीन पर गिर पड़े। कार्यकारी लांस दफादार कुशवाहा ने सशस्त्र डकैतों की चुनौती का डट कर सामना किया और बेहोश अफसर तथा उनके परिवार की रक्षा के लिए, गाड़ी उठाने के जैक से डाकुओं का बहादुरी से मुकाबला किया। डाकुओं की तादाद अधिक होने और कुछ जबरदस्त चोटें लगने के कारण वे स्वयं बेहोश होकर नीचे गिर पड़े। उसी समय एक डाकू

देसी पिस्तौल निकाली और जमीन पर लगभग बेहोश पड़े अफसर पर गोली चलाने ही वाला था कि लांस दफादार कुशवाहा, असाधारण वीरता का परिचय देते हुए और परिणामों की परवाह न करते हुए, बीच में कूद पड़े और अत्यन्त निकट से गोलियों की बौछार की चपेट में आ गए। जिससे बाद में उनका निधन हो गया।

इस प्रकार कार्यकारी लांस दफादार कृष्ण देव कुशवाहा ने उत्कृष्ट कोटि की वीरता, साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

4. 1281723 हवलदार प्रेमनाथ राय, (मरणोपरान्त)
विद्युत और यांत्रिक इंजीनियरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 5 दिसम्बर, 1987)।

5 दिसम्बर, 1987 को 833 फील्ड वर्कशाप कंपनी हवलदार) प्रेमनाथ राय ने जो वार्षिक अवकाश पर अपने गांव देहरी शाहबाद (बिहार) में थे, अपने खेत में काम कर रहे थे। अचानक उन्हें पता लगा कि घातक हथियारों से लैस कुख्यात डाकुओं का एक गिरोह डकैती डालने की मंशा से उनके पड़ोसी के घर में घुस गया है। उन्होंने समय के तकाजे को समझकर अपने एक पड़ोसी की राइफल ली और ग्रामीणों के समूह को इकट्ठा करके उन्हें हिम्मत के साथ स्थिति का सामना करने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद उन्होंने गांव से बाहर निकलने वाले सभी रास्तों पर उन्हें तैनात कर दिया और स्वयं उस रास्ते पर आ डटे, जहां से डाकुओं के भाग निकलने की सबसे अधिक संभावना थी।

डकैती डाल कर डाकू गांव के बाहर निकले और उसी रास्ते से आते दिखाई दिए जहां हवलदार राय स्वयं डटे हुए थे। उन्होंने डकैतों को ललकारा। हवलदार राय तथ डकैतों के बीच लगभग डेढ़ घण्टे तक घमासान गोलीबारी हुई। दोनों तरफ से हुई गोलीबारी के दौरान श्री राय ने दो डकैतों को मार गिराया और अनेकों को घायल कर दिया परन्तु डकैतों की एक गोली उनके सिर में आ लगी और वे उसी स्थान पर वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार हवलदार प्रेमनाथ राय ने उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया। सशस्त्र डाकुओं के साथ संघर्ष में उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए तथा भारतीय सेना की उच्चतम परंपरा को निभाते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

5. श्री अशोक कुमार शर्मा,
जूनागढ़, गुजरात

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 27 जनवरी, 1988)

27 जनवरी, 1988 को गिर पश्चिम मंडल की पिलिपट गश्त-मार्ग के वन गश्ती रक्षक श्री आर० के० वर को आत्म रक्षा में चोरी से लकड़ी काटने वाले बदमाशों के एक गिरोह पर गोली चलानी पड़ी, जिसमें एक बदमाश मारा गया। मृतक के संबंधी और उसके समुदाय के अन्य लोग इस घटना से भड़क उठे और 40-50 व्यक्तियों का झुंड बनाकर गश्ती रक्षक और वनपाल के परिवार के सदस्यों पर हमला करने और उन्हें मार डालने के लिए आ धमके। गिर पश्चिम मंडल के उप वन संरक्षक श्री अशोक कुमार शर्मा ने गश्ती रक्षक और उनके परिवार पर आए खतरे को भांपा और उन्हें बचाने का प्रयास किया। उत्तेजित भीड़ में 4-5 व्यक्तियों ने उन पर आक्रमण कर उन्हें छुरे से बुरी तरह घायल कर दिया। यद्यपि वह घायल अवस्था में थे और उनका खून बह रहा था, फिर भी वे अपने अधीनस्थ कर्मचारी के परिवार को सुरक्षित किए बिना वहां से नहीं हटे। उन्हें नाजुक हालत में अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों के एक दल द्वारा उनका आपरेशन किया गया और सौभाग्य से उन्हें बचा लिया गया।

श्री अशोक कुमार शर्मा ने इस प्रकार अत्यन्त प्रतिकूल स्थिति में साहस और धैर्य का परिचय दिया जिसमें उनकी जान भी जा सकती थी।

6. श्री शक्तिसिंह सामंतसिंह बिसाना
जूनागढ़, गुजरात। (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 27 जनवरी, 1988)

27 जनवरी, 1988 को जब गिर वन स्थलों के पिलिपट गश्ती क्षेत्र में एक गश्ती रक्षक श्री आर० के० वर गश्ती ड्यूटी पर थे तब चोरी से लकड़ी काटने वालों के एक गिरोह ने उन पर हमला कर दिया। गश्ती रक्षक ने आत्म रक्षा में गोली चलाई जिसके परिणामस्वरूप एक जांगल चोर मारा गया। मारे गए जांगल चोर के संबंधी और समुदाय के अन्य सदस्य भड़क उठे और 40-60 व्यक्तियों की भीड़ गश्ती रक्षक और वनपाल के परिवार वालों को मार डालने के इरादे से उनके घरों की ओर बढ़ी। वन रक्षक के परिवार को बचाने के लिए उनके आवास पर गए उप वन संरक्षक श्री अशोक कुमार शर्मा को भीड़ में से किसी ने छुरा भोंक दिया। गेस्टहाउस (सासन) के प्रबंधक के रूप में कार्यरत श्री एस० एम० बिसाना उस समय श्री शर्मा के साथ थे। वन गश्ती रक्षक के परिवार वालों तथा अपने वरिष्ठ अधिकारी पर आए खतरे को भांपते हुए, बचाव के आवेश में श्री बिसाना ने उस बदमाश को पकड़ लिया परन्तु उसने पलटवार श्री बिसाना पर छुरे से अनेक वार किए। श्री बिसाना की जख्मों के कारण घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई।

श्री शक्तिसिंह सामंतसिंह बिसाना ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और बदमाशों की एक क्रुद्ध भीड़ ने अपने वरिष्ठ अधिकारी और अपने सहयोगी के परिवार वालों की जान बचाने में अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

7. श्रीमती जशोदा पाल (मरणोपरान्त)
उत्तरी 24 परगना, पश्चिम बंगाल।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 फरवरी, 1988)

9 फरवरी, 1988 को सुबह 9.30 बजे के लगभग एक सवारी रेलगाड़ी उत्तरी 24 परगना जिले में मध्यमग्राम से चलकर हृदयपुर स्टेशन पर आ रही थी। उस समय लगभग 3 1/2 वर्ष का एक बच्चा उसी रेलवे लाइन को पार कर रहा था जिस पर रेलगाड़ी आ रही थी। बड़ी संख्या में लोग असहाय अवस्था में इस घटना को देखते रहे परन्तु चीख-पुकार के सिवा बेचारे बच्चे को बचाने के लिए कोई भी आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उनके द्वारा की जा रही चीख-पुकार ने नजदीकी मुहल्ले की नौकरानी श्रीमती जशोदा पाल का ध्यान आकर्षित किया जो उस समय बर्तन धोने में व्यस्त थी। श्रीमती पाल तुरंत स्थिति को समझ कर उस तरफ भागी और रेल लाइन के ऊपर कूद पड़ी। वह बच्चे की जान बचाने में सफल हो गई परन्तु स्वयं को पटरी से नहीं हटा सकीं और फलस्वरूप रेलगाड़ी द्वारा कुचली गई।

श्रीमती जशोदा पाल ने, जो एक गरीब गृहिणी थीं और अपने बड़े परिवार के साथ मुश्किल से गुजारा कर रही थीं, एक पावन उद्देश्य के लिए साहस और आत्म-बलिदान का असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया।

8. विंग कमांडर बलजीत सिंह मिन्हास (11287) (मरणोपरान्त)
फ्लाइंग (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 अप्रैल, 1988)

4 अप्रैल, 1988 को विंग कमांडर बलजीत सिंह मिन्हास हंटर मार्क 56 वायुयान पर उड़ान कर रहे थे। अवतरण के अंतिम चरण में वायुयान बहुत नीचे 200 फुट की नाजुक ऊंचाई पर, बिना किसी पूर्व लक्षण के, आग की लपटों में घिर गया। उन्होंने महसूस किया कि वायुयान से तुरंत कूद जाने पर ही उनके बचने की थोड़ी-बहुत उम्मीद की जा सकती है। एक निष्ठावान अफसर के रूप में उन्होंने यह भी महसूस किया कि यदि उन्होंने ऐसा किया तो बड़ी उम्मीद है कि उनका वायुयान अपने पहुंच मार्ग पर एकदम सामने पड़ने वाले असनावती गांव में जाकर ध्वस्त हो जायेगा। इस बहादुर अफसर ने कुछ और क्षण वायुयान में ही बने रहने का निर्णय लिया ताकि उसे कुछ और समय तक नियंत्रित रख सकें तथा

गांव बच जाए। जब वे वायुयान से कूदे, तब तक बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि उनका वायुयान पहले ही इतना नीचे आ चुका था कि बचने की कोई संभावना नहीं थी।

अपनी जान बचाने के लिए यदि वे वायुयान से पहले कूद जाते तो उनका ऐसा करना पूरी तरह से उचित होता। अपने अंतिम वायुयान में जान-बूझ कर देर तक बने रहने का उनका निर्णय और अन्य लोगों की जान बचाने के लिए अपनी जान न्यौछावर करना उनकी अपार वीरता और कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय देता है। भीषण विपत्ति और संकट की घड़ी में उनके द्वारा सोच-समझकर और अविचलित मन से किया गया उनका यह सर्वोच्च बलिदान दूसरों के लिए सदा अनुकरणीय रहेगा।

विंग कमांडर दलजीत सिंह मिन्हास ने इस प्रकार संकट की घड़ी में अदम्य साहस, उच्च व्यावसायिक दक्षता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए वायुसेना की उत्कृष्ट परंपराओं के अनुरूप अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

9. श्री अरविन्द डी० हेगड़े, (मरणोपरान्त)
उत्तर कन्नड़, कर्नाटक

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 अप्रैल, 1988)

19 अप्रैल, 1988 की रात यह सूचना मिलने पर कि उत्तर कन्नड़ जिले में सिरसी वन प्रखंड के हुलेकल रेंज के आरक्षित जंगल से तस्करों के एक गिरोह द्वारा वन-उत्पाद चुपके ले जाए जा रहे हैं, हुलेकल रेंज के वन अधिकारी श्री अरविन्द डी० हेगड़े को आदेश दिया गया कि वे अपने मातहतों के सहयोग से तस्करों को रोकें और गिरफ्तार करें। श्री हेगड़े ने जंगलों से होकर गुजरने वाले रास्ते पर बड़े-बड़े पत्थरों से एक रुकावट खड़ी की ताकि लारी को रोककर तस्करों को पकड़ा जा सके। 20 अप्रैल, 1988 को लगभग 3.30 बजे सुबह उन्होंने वन उत्पादों से लदी एक लारी को अपनी ओर आते देखा। रेंज वन अधिकारी के रुकने के संकेत की अवहेलना करते हुए लारी रुकावट को तोड़ती हुई तेजी से आगे निकल गई। अपनी गाड़ी में रेंज वन अधिकारी ने अपने स्टाफ के साथ लारी का पीछा किया और टायरों पर गोली मारने का प्रयास किया किन्तु निशाना चूक गया। वे लारी का पीछा करते रहे और अंततः लारी एक श्री नीलकान्त हेगड़े के घर के पास जाकर रुकी, जो सिरसी के निवासी हैं और जिन्हें जंगल उत्पादों के एक प्रभावशाली और कुख्यात तस्कर के रूप में जाना जाता है।

जब रेंज वन अधिकारी के कर्मचारी तस्करों को गाड़ी से उतरने और प्रतिरोध न करने के लिए कह रहे थे, तभी लारी का ड्राइवर हैड लाइटों को बुझाने का दिखावा करते हुए ड्राइवर की सीट पर जा बैठा और बचकर निकल जाने के लिए उसने गाड़ी अचानक स्टार्ट कर दी। यद्यपि इस अचानक हरकत से स्टाफ संभल न पाया लेकिन श्री हेगड़े ने तुरन्त कार्रवाई की और उन्होंने लारी के बंपर पर कूद कर लारी के भीतर घुसने का प्रयास किया। लारी तेज रफ्तार से दौड़ने लगी। लारी में मौजूद 10 तस्करों ने श्री हेगड़े पर हमला बोल दिया और उन्हें मारने लगे। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए यह बहादुर अफसर वीरगति को प्राप्त हुआ।

श्री अरविन्द डी० हेगड़े ने असाधारण साहस और उच्चतम कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय देते हुए वन संपदा के संरक्षण हेतु सर्वोच्च बलिदान दिया।

10. जी-128826—वाई० ओ० ई० एम० सते सिंह
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 17 जून, 1988)

उत्खनक मशीन आपरेटर सते सिंह, 153 फार्मेशन कटिंग प्लाटून (सीमा सड़क संगठन) को हुनली-अनीनी मार्ग पर चट्टान काटने के लिए डोजर आपरेटर के रूप में लगाया गया। चट्टान काटने के स्थल पर एक तरफ पहाड़ की कठोर और सीधी खड़ी-चट्टानी दीवार है और दूसरी तरफ लगभग 300 मीटर गहरी घाटी है। इसलिए यहां चट्टान में छेद करना तथा डोजर चलाना अत्यन्त कठिन और खतरनाक कार्य है।

17 जून, 1988 को लगभग 1340 बजे, ओ० ई० एम० सते सिंह बारूद से टूटी कठोर चट्टान और उसका मलबा हटाने के लिए डोजर चला रहे थे कि उन्हें चेतावनी की यह मोटी सुनाई दी कि वे अपना डोजर पीछे मोड़ें क्योंकि पहाड़ी की तरफ से बड़ी-बड़ी चट्टानें गिरने लगी थीं। उस समय डोजर सुरक्षित पार्किंग स्थान से लगभग 200 मीटर आगे था। सते सिंह ने सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए डोजर को पीछे करना शुरू किया। अचानक पहाड़ी की तरफ से कुछ बड़ी-बड़ी चट्टानें डोजर कुछ ही फुट दूर से निकल कर घाटी की तरफ लुढ़कीं। उस समय, ओ ई० एम० सते सिंह चाहते तो डोजर से आसानी से कूद सकते थे और भाग कर जान बचा सकते थे। परन्तु अपनी जान की परवाह न करते हुए वह डोजर से कूदे बिना पहाड़ी से लुढ़कतीं चट्टानों से डोजर को बचाने लिए उसे सुरक्षित स्थान की ओर पीछे करने में जुटे रहे। डोजर को पी. करने के दौरान एक बड़ी चट्टान बहुत जोर से उनकी बाईं टांग पर आकर लगी। अचानक चोट लगने से, ओ० ई० एम० सते सिंह बेहोश हो गए और डोजर से नीचे गिर गए। एक या दो मिनट बाद वे होश में आए और उन्होंने डोजर की ओर देखा जो अभी भी स्टार्ट था परन्तु चल नहीं रहा था। उन्होंने देखा कि उनकी बाईं टांग की हड्डी कई जगह से टूट चुकी हैं और उसमें से बहुत खून बह रहा है। बिना समय खोए उसी स्थिति में, वह फिर से डोजर की आपरेटर सीट पर कूद कर बैठ गए और डोजर को सुरक्षित स्थान की ओर पीछे करने लगे। यह काम वह टूटी हुई टांग को एक हाथ से थामकर और एक हाथ तथा एक टांग से डोजर चलाकर कर रहे थे। आखिरकार ओ ई एम सते सिंह डोजर पर फिर से बेहोश हो गए। बाद में उन्हें खतरनाक घायल हालत में आर्मी बेस अस्पताल में इलाज के लिए तुरन्त ले जाया गया।

इस प्रकार ओ० ई० एम० सते सिंह ने अपनी जान को जोखिम में डाल कर डोजर को बचाने में अडिग साहस और असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

11. श्री अजीत कुमार डोवल,
काका नगर, नई दिल्ली।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 26 जनवरी, 1989)

श्री अजीत कुमार डोवल को कुछ क्रूर आतंकवादियों के विरुद्ध अनेकों संवेदनशील कार्य सौंपे गए थे। इन कार्यों के लिए उच्च कोटि के साहस तथा निष्ठा की आवश्यकता थी। इन कार्यों ने इनकी जान को भी जोखिम में डाल दिया। अपनी जान की परवाह किए बिना इन्होंने आतंकवादियों के विरुद्ध योजना बनाई और उसे कार्यान्वित किया, जिसमें इन्हें उच्च कोटि की सफलता प्राप्त हुई जिससे इनके संगठन को गौरव प्राप्त हुआ। इन कार्यों को करने के दौरान दीर्घ काल तक इनके ठौर-ठिकाने का कोई पता नहीं था, जिसके कारण यहां तक चिन्ता हो गई थी कि ये पकड़े गए हैं और संभवतः घोर यातना भुगत रहे हैं।

ऐसे ही कार्यों में से एक कार्य में इन्हें आतंकवादियों के एक समूह से जूझना था, जिनमें से कुछ कुख्यात और खतरनाक आतंकवादी थे। उनसे जूझने में इनकी अपनी जान को अत्याधिक खतरा पैदा हो गया था। अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए इन्होंने आतंकवादियों को सम्मोहित करने के लिए एक योजना बनाई और उसे कार्यान्वित किया तथा जिन कुख्यात आतंकवादियों की तलाश थी उनमें से कुछ को फंसाने में ये सफल हो गए। इन कार्यों को करते हुए श्री अजीत कुमार डोवल ने न केवल उल्लेखनीय कार्यकुशलता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया बल्कि अनन्य संकल्प से अपना कार्य किया और कई बार अपनी जान को भी जोखिम में डालते हुए अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

सं० 25 प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. भूतपूर्व हवलदार श्री मोहन सिंह,
गांधी नगर, दिल्ली।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 28 मार्च, 1984)

28 मार्च, 1984 को दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा समिति के तत्कालीन अध्यक्ष श्री हरबंस सिंह मनचन्दा कार से गुरुद्वारा शीश गंज जा रहे थे।

कार श्री मोहन सिंह चला रहे थे । कार तिलक ब्रिज के पास तिलक मार्ग पर रुकी । अचानक दो सशस्त्र आतंकवादी सामने आये और उन्होंने श्री मनचंदा पर गोली चलाई तथा उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया । कार चालक श्री मोहन सिंह ने उनको पकड़ने की कोशिश की किन उनमें से एक आतंकवादी ने उनकी गर्दन पर गोली मार दी । श्री मनचंदा और श्री मोहन सिंह दोनों को लोक नायक जय प्रकाश नारायण अस्पताल ले जाया गया जहां श्री मनचंदा को मृत घोषित कर दिया गया और श्री मोहन सिंह को अस्पताल में भर्ती करके उनका उपचार किया गया ।

भूतपूर्व हवलदार मोहन सिंह ने दो आतंकवादियों को पकड़ने में उनसे हाथापाई करते हुए अपनी जान की परवाह न करके अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

2. श्री रणबीर सिंह बिष्ट, (मरणोपरान्त)
टिहरी गढ़वाल, उत्तर प्रदेश ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 मई, 1984)

25 मई, 1984 को टिहरी गढ़वाल के मोकलाना रेंज में स्थित वन सिविल वन बागान में विनाशकारी आग लग गई । श्री रणबीर सिंह बिष्ट उस रेंज के कल्चर जमादार थे । उन्होंने दो घण्टे तक आग की लपटों को बुझाने का भरसक प्रयास किया । तथापि, तेज हवा के कारण आग की लपटों को और अधिक बढ़ने से वे नहीं रोक सके और इसी प्रक्रम में स्वयं आग की लपटों से घिर गये और जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़े । एक वन गार्ड और एक नेपाली मजदूर यह देख-कर तुरन्त घटनास्थल पर पहुंच गए । उन्होंने आग की लपटों से श्री बिष्ट को निकाला और उन्हें नरेन्द्र नगर स्थित राजकीय अस्पताल में दाखिल कराया जहां उन्होंने 6 घण्टों तक मौत से जूझने के बाद दम तोड़ दिया । श्री बिष्ट के अथक प्रयास के ही कारण आग को नियंत्रण में लाया जा सका । परिणामस्वरूप, समीपवर्ती गायब्राड़ा तथा सन्निकट गावों पर होने वाला खतरा टल गया ।

श्री रणबीर सिंह बिष्ट ने अनुकरणीय साहस व उच्चतम कोटि की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए जंगल रेंज में विनाशकारी आग को नियंत्रित करने में अपने जीवन की आहुति दे दी ।

3. श्री नारायण प्रसाद दुबे (मरणोपरान्त)
शिवाजी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 13 फरवरी, 1985)

13 फरवरी, 1985 की रात को श्री अरुण कुमार मेहरा ने एक चोर को शिवाजीनगर, भोपाल में अपने पड़ोसी के घर में घुसने की कोशिश करते हुए देखा । वह बाहर आये और सहायता के लिए शोर मचाया । इसे सुनकर पास ही रह रहे श्री नारायण प्रसाद दुबे बाहर आये और चोर को पकड़ने के लिए श्री मेहरा की सहायता के लिए बढ़े । जब श्री दुबे श्री मेहरा के साथ चोर को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे, तो चोर ने अपनी पिस्तौल से श्री दुबे पर गोली चला दी । श्री दुबे ने इसी तरह से अपने आप को बचा लिया । श्री दुबे ने फिर भी चोर का पीछा करना नहीं छोड़ा । वह चोर से भिड़ गए और उसे पकड़ने की कोशिश की । इस प्रक्रिया में चोर ने फिर से तीन गोलियां चलाईं, जिनमें से एक गोली श्री दुबे को लगी और वह घायल हो गए । उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहां जख्मों के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार श्री नारायण प्रसाद दुबे ने अपनी जान गंवाकर भी अपने पड़ोसी के घर में चोरी होने को रोकने के सफल प्रयास में अनुकरणीय साहस और अत्यन्त उच्चकोटि की नागरिक भावना का परिचय दिया ।

4. श्री राजकमार पंजवानी (मरणोपरान्त)
बम्बई (महाराष्ट्र) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 मार्च, 1986)

4 मार्च, 1986 को दोपहर में तीन अज्ञात व्यक्ति, जिनकी आयु 28-30 वर्ष थी, बम्बई बैंक की बान्द्रा शाखा में घुसे । इनमें से एक व्यक्ति ने बैंक के शाखा प्रबंधक के केबिन में घुसकर कार्यकारी प्रबंधक को जान से मार डालने की धमकी दी और दूसरा व्यक्ति बैंक के प्रवेश द्वार के समीप स्थित काउंटर पर खड़ा हो गया । तीसरा डाकू रोकड़ काउंटर पर खड़े बैंक के गनमैन के पास गया और उसकी बंदूक छीनने की कोशिश करने लगा । इससे दोनों के बीच हाथा-पाई हो गई । श्री राजकुमार पंजवानी, जो अपने बैंक सम्बन्धी काम के लिए वहां आए हुए थे, गनमैन की सहायता के लिए दौड़े । बैंक शाखा के स्टाफ के कुछ सदस्यों ने भी उस बदमाश पर चैयर, कुर्सियां आदि फैंकी । इस तरह के शोरगुल को देखकर काउंटर के दूसरे सिरे पर खड़े लुटेरे ने रिवाल्वर निकालकर श्री राजकुमार पंजवानी और गनमैन दोनों पर गोली चलाकर उन्हें घायल कर दिया । दूसरे लुटेरे ने भी, जो शाखा प्रबंधक के केबिन में था, बाहर आकर गोली चलाई जिससे बैंक का एक कर्मचारी घायल हो गया । इस बीच बैंक के कोषाध्यक्ष ने चोर घण्टी बजा दी जिसके फलस्वरूप तीनों डाकू बैंक से कोई नकदी लिए बगैर बिना नम्बर वाली कार से फरार हो गए । श्री राजकुमार पंजवानी ने, जो गंभीर रूप से जख्मी हो गए थे, अस्पताल ले जाते समय ही दम तोड़ दिया ।

इस प्रकार श्री राजकुमार पंजवानी ने अपनी जान की बाजी लगाकर डकैती के प्रयास को विफल करने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया ।

5. टी/नं० 2514 सी० पी० श्रमिक कंचा लोपचन ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 जनवरी, 1987)

सी० पी० श्रमिक कंचा लोपचन सन्तरी के रूप में 88 सड़क निर्माण कम्पनी परियोजना बरटक (सीमा सड़क संगठन) द्वारा नियुक्त किए गए थे । 8 जनवरी, 1987 को लगभग प्रातः 8 बजे जब श्री कंचा लोपचन हुनली आनीनी रोड़ पर कि० मी० 102.3 पर जहां पत्थर तोड़ने का काम चल रहा था सन्तरी की ड्यूटी कर रहे थे । श्री कंचा लोपचन ने देखा कि पहाड़ी से पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े गिर रहे हैं । बड़े पैमाने पर होने वाले भू-स्खलन के कारण उत्पन्न आसन्न खतरे को देखकर उन्होंने नीचे काम कर रहे लोगों को वहां से हट जाने के लिए सतर्क किया । जैसे ही उन्होंने सतर्क रहने को कहा, भूखण्ड नीचे आ गिरे । मजदूरों ने श्री कंचा लोपचन की आवाज सुनी और वे सुरक्षित स्थान पर चले गए । श्री कंचा लोपचन अपने एक सहयोगी के साथ इसके तुरन्त बाद ऊपरी स्लोप पर उपकरणों को हटाने में जुट गए तथा आंशिक रूप से मलबे में फंसे उपकरणों को भी सुरक्षित स्थान में ले जाने में लग गए । ऐसा करने में, जहां वे बहुत से उपकरणों को भी सुरक्षित स्थान में ले जाने में सफल रहे, वहां एक कम्प्रेसर को अथक प्रयास के बावजूद नहीं हटाया जा सका ।

इस तरह सी० पी० श्रमिक कंचा लोपचन ने अपनी जान को जोखिम में डालकर उत्कृष्ट साहस व कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और बहुमूल्य उपकरणों को नष्ट होने से बचा लिया ।

6. टी/नं० 1566 सी० पी० श्रमिक राम बहादुर ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 8 जनवरी, 1987)

सी० पी० श्रमिक राम बहादुर हुनली अनीनी रोड़ पर स्थित 88 सड़क निर्माण कम्पनी, परियोजना बरटक (सीमा सड़क संगठन) में सन्तरी की ड्यूटी पर कार्यरत थे ।

8 जनवरी, 1987 की प्रात. को लगभग 8 बजे इन्होंने पहाड़ी की ओर से कुछ छोटे पत्थरों को खिसकते देखा । इन्होंने यह देखकर महसूस किया कि संभवतः भू-स्खलन होने वाला है । इन्होंने निचली ढलान पर काम कर रहे व्यक्तियों को तुरंत सतर्क किया और उन्हें भागकर सुरक्षित जगह पर जाने के लिए कहा । उसी समय पहाड़ी खिसकने लगी और उसका मलबा वहीं गिरने लगा जहां श्री राम बहादुर खड़े थे । एकदम नीचे काम कर रहे मजदूरों ने इनकी आवाज तक भी नहीं सुनी । भू-स्खलन से पूरी तरह अनभिज्ञ होकर श्री बहादुर तब तक चिल्लाते रहे जब तक कि सबसे नीचे काम कर रहे मजदूर बाहर नहीं आ गए ।

इसके पश्चात् वे पीछे की ओर भागे और अपनी जान की परवाह किए बगैर उन्होंने कीमती उपकरणों व स्टोर की मदों को हटाना आरंभ कर दिया। हालांकि यह काम करते समय उनके ऊपर एक पत्थर गिरा फिर भी वे ढेर सारे उपकरण वहां से हटाकर सुरक्षित स्थान पर ले गए।

इस प्रकार सी० पी० श्रमिक राम बहादुर ने अपनी जान को जोखिम में डालकर साहस, सूझबूझ तथा तत्परता का परिचय देते हुए 150 मजदूरों और कम्पनी के कीमती उपकरणों को बचा लिया।

7. श्री नवल कान्त (मरणोपरान्त)
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 9 मई, 1987)

9/10 मई, 1987 की रात को लगभग 9.30 बजे डकैतों को एक गिरोह श्री बीरेन्द्र कुमार, मोहल्ला हकीम सराय, पुलिस थाना—बन्ना देवी, अलीगढ़ के घर में घुस गया तथा घर को लूटने की कोशिश की। श्री बीरेन्द्र कुमार ने जोर से चिल्लाना शुरू किया। उनकी आवाज सुनते ही श्री नवल कांत, श्री गिरीश चन्द्र, श्री प्रदीप कुमार समेत अन्य पड़ोसी घटनास्थल पर पहुंचे और घातक हथियारों से लैस डकैतों से भिड़ गए अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए पड़ोसी श्री बीरेन्द्र कुमार ने डकैतों से पूरी टक्कर ली। भिड़न्त में श्री नवल कान्त समेत अन्य व्यक्ति बुरी तरह से जख्मी हो गये लेकिन जख्मों की परवाह न करते हुए वे सशस्त्र डकैतों से भिड़े रहे और उनके अदम्य साहस और दुःसाहसिक प्रयास के कारण पांच डकैत पकड़े गए तथा डाका डालने के उनके प्रयास विफल रहे। दुर्भाग्यवश, श्री नवल कान्त की, जो बुरी तरह से जख्मी हो गए थे, बाद में मृत्यु हो गई।

श्री नवल कान्त ने सशस्त्र डाकुओं का मुकाबला करते हुए अनुकरणीय साहस व उत्कृष्ट बहादुरी का परिचय दिया तथा अपने पड़ोसी की जान-माल की रक्षा करने में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

8. श्रीमती रानो,
पेटियलवाला पंजाब।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 22 मई, 1987)

22 मई, 1987 को रात के 8.30 बजे डाकखाना रहिमाबाद, डेरा बाबा नानक के निवासी सर्वश्री मदन लाल और उनके भाई सुभाष चन्द्र अपने गांव में स्थित अपनी दुकान पर बैठे थे कि इस बीच तीन आतंकवादी, जिनके नाम निशान सिंह धीरा और जागीर सिंह थे (जिनकी शनाख्त का पता बाद में चला), उनकी दुकान पर आये। निशान सिंह के पास एस० बी० बी० एल० गन थी। उसने सुभाष चन्द्र पर तीन बार गोलियां चलाई, जिससे उनकी तत्काल मृत्यु हो गई। जागीर सिंह ने भी अपने रिवाल्वर से गोलियां चलाई। श्री मदन लाल ने अपनी जान की परवाह किए बिना जागीर सिंह से हाथापाई की और उसे दबोच लिया। बन्दूक से गोली चलने की आवाज सुनकर, श्री मदन लाल की पत्नी श्रीमती रानी और श्री अयूब मसीह घटनास्थल पर पहुंचे गए। हालांकि दो आतंकवादी, निशान सिंह और धीरा भागने में सफल हुए, परन्तु श्रीमती रानो अपने पति की सहायता से तीसरे आतंकवादी, जागीर सिंह को पकड़ने में सफल हुईं, जिसे बाद में स्थानीय पुलिस को सौंप दिया गया।

इस प्रकार श्रीमती रानो ने उच्च साहस का परिचय दिया और अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना सशस्त्र आतंकवादियों का मुकाबला किया और तीन में से एक आतंकवादी को पकड़वाने में सहायता की।

9. श्री जगदीश शर्मा,
टोपा कोयला खान, बिहार।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 4 जून, 1987)

4 जून, 1987 को लगभग दिन के 1.15 बजे आग्नेय अस्त्रों और घातक हथियारों से लैस 6-7 डाकुओं के एक दल ने बिहार में भारतीय स्टेट बैंक की टोपा कोयला खान शाखा में प्रवेश किया। बैंक के प्रवेश द्वार पर ड्यूटी पर तैनात बैंक के चौकीदार श्री जगदीश शर्मा पर डाकुओं ने हमला कर दिया। डाकुओं ने इनकी टांग में गोली मार कर तथा चाकू घोंप कर और बन्दूक का बट इनके सिर पर मारकर इन्हें घायल कर दिया। फिर भी इन्होंने अनुकरणीय साहस दिखाते हुए तथा अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए बैंक की सम्पत्ति की सुरक्षा और अन्य लोगों की जीवन रक्षा के लिए अकेले ही डाकुओं का डटकर मुकाबला किया और उनके नेता को गोली मार दी जो बाद में जख्मों के कारण मर गया।

इस प्रकार श्री जगदीश शर्मा ने अपने जीवन को खतरे में डालकर तथा बैंक में डकैती के प्रयास को विफल करते हुए उत्कृष्ट साहस और अगाध कर्तव्यनिष्ठा की भावना का परिचय दिया।

10. श्री विजय कुमार पांडेय,
राजौरी गार्डेन, नई दिल्ली।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 11 जून, 1987)

11 जून, 1987 को करीब 8.30 बजे सायं राजौरी गार्डेन की निवासी श्रीमती ममता चड्ढा मोती नगर से साइकिल रिक्शे में वापस अपने घर जा रही थी। राजकीय उच्चतम माध्यमिक विद्यालय एफ ब्लाक, राजौरी गार्डेन के पास 20-30 वर्ष के बीच की आयु के दो युवकों ने उक्त रिक्शे को रोका और उनमें से एक ने श्रीमती चड्ढा के गले से सोने की जंजीर पकड़ ली। जब श्रीमती चड्ढा ने सहायता के लिए पुकारा तो अपराधी ने चाकू निकाला। सहायता की पुकार को सुनकर पास ही रह रहे श्री विजय पांडेय बाहर आए और दौड़कर घटनास्थल पर पहुंच गए तथा अपराधियों से भिड़ गए। अपराधियों ने इनके पेट में 2/3 बार चाकू से प्रहार किया और भागने में सफल हो गये। श्री पांडेय को राना नर्सिंग होम में दाखिल किया गया और एक सप्ताह तक उसका उपचार चलता रहा। उसके बाद, दोनों अपराधी गिरफ्तार किए गए और जो सोने की जंजीर उन्होंने छीनी थी वह भी उनसे बरामद कर ली गई। इस घटना में जख्मी होने के कारण, श्री पांडेय भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा, जिसके लिए वह तैयारी कर रहे थे, नहीं दे पाए।

इस प्रकार श्री विजय पांडेय ने अपनी जान को अत्यधिक जोखिम में डालकर एक महिला की जान एवं सम्पत्ति को बचाने में अनुकरणीय साहस, सेवा की असाधारण भावना और शौर्य का परिचय दिया।

11. श्री पी० चिदम्बरम (मरणोपरान्त)
कोयम्बतूर, तमिलनाडु।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 14 जुलाई, 1987)

14 जुलाई, 1987 को तमिलनाडु वन विभाग में वनपाल, श्री पी० चिदम्बरम जब अपने सात कर्मचारियों के साथ सत्यमंगलम रेंज कोगारपालयम हल्के के गुडरिपलम क्षेत्र में चोरी से शिकार करने वालों के एक मामले का पता लगाने के कार्य में व्यस्त थे तो इनकी मुठभेड़ चोरी से हाथियों का शिकार करने और चन्दन की लकड़ी की तस्करी करने वाले एक कुख्यात गिरोह के साथ हो गई। इस मुठभेड़ के दौरान चोरी से शिकार करने वालों के कुख्यात नेता ने श्री चिदम्बरम को एकदम निकट से गोली मार कर उनकी हत्या कर दी।

श्री पी० चिदम्बरम, जोकि राज्य वन विभाग के एक बहादुर और कुशल अधिकारी थे और बहुत से वन अपराधों का पता लगाने में सफल रहे थे, ने अंततः पेड़-पौधों एवं वन्य जीवों को खतरों से बचाने में ही अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

12. 1461937 लांस नायक ओ० ई० एम० उत्तम कुमार बसु,
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 25 अगस्त, 1987)

1647 पायनीयर कम्पनी (सीमा सड़क संगठन) के लांस नायक ओ० ई० एम० उत्तम कुमार बसु को मीजोरम में फावलकुन्ह-निमबुग मार्ग पर पहाड़ काटने के लिए डोजर चलाने के लिए तैनात किया गया था। बरसात में काफी समय तक भारी वर्षा होने और कोहरे के कारण पहाड़ काटने, सड़क चौड़ी करने के कार्य की सामान्य स्थिति अत्यधिक खराब हो गई थी जिससे भूस्खलन, शिलाखण्ड खिसकने एवं तेज गति से पत्थर गिरने के कारण अत्यधिक खतरा तथा जोखिम हो गया था। लांस नायक बसु ऐसी चुनौती पूर्ण स्थिति में भी अपना डोजर चलाते रहे हालांकि इसमें उनकी जान को अत्यधिक खतरा था। 25 अगस्त, 1987 को जब वह सड़क के एक भाग को चौड़ा करने के कार्य में जुटे हुए थे तो पहाड़ी के ऊपरी सिरे से अचानक मिट्टी समेत शिलाखण्ड गिर गया और उसने उन्हें डोजर के नीचे दबा दिया और बाद में जख्मों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

लांस नायक ओ० ई० एम० उत्तम कुमार बसु ने जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स की उच्चतम परम्परा को कायम रखते हुए खतरनाक एवं कठिन परिस्थितियों में अनुकरणीय साहस, धैर्य एवं कर्तव्यनिष्ठा की भावना का परिचय दिया।

13. जे० सी० ओ-81018 सूबेदार मेजर देवेन्द्र पाल त्यागी
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 10 सितम्बर, 1987)

1638 पायनीयर कम्पनी (सीमा सड़क संगठन) के सूबेदार मेजर देवेन्द्र पाल त्यागी को प्रकरा साइट में कंक्रीट कार्य के पर्यवेक्षण का काम दिया गया था, जहां बेली सस्पेंशन पुल का निर्माण कार्य चल रहा था।

10 सितम्बर, 1987 को लगभग 16.45 बजे निचली ढलान पर कार्मिक काम कर रहे थे कि एकाएक पहाड़ी का बड़ा भाग नीचे की ओर सरका। संतरियों द्वारा बजाई गई सीटी की आवाज सुनकर, सूबेदार मेजर त्यागी को नीचे काम कर रहे अपने कार्मिकों की जान को तुरन्त खतरा महसूस हुआ। गंभीर मुसीबत का अहसास होते ही, सूबेदार मेजर त्यागी अपनी जान के खतरे की परवाह किए बगैर, अपने कार्मिकों की ओर दौड़े और उन्हें सुरक्षित स्थान पर तेजी से भागने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्वयं इस बात का ध्यान रखा कि मजदूरों समेत सभी कार्मिक खतरे के स्थान से निकल जाएं। ऐसा करने से उन्हें स्वयं खतरे वाली जगह से निकलने में काफी विलंब हो गया और वे स्वयं भू-स्खलन के कारण नीचे दब गये। हालांकि उन्हें मलबे के नीचे से तत्काल निकाला गया फिर भी अन्दरूनी घातक चोट लगने के कारण उन्होंने उसी दिन अस्पताल में दम तोड़ दिया।

इस प्रकार सूबेदार मेजर देवेन्द्र पाल त्यागी ने अपने सहकर्मियों की जान बचाने के लिए अद्वितीय साहस व परम कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया और इसी प्रक्रिया में सेना के उच्च परंपरा के अनुरूप अपने प्राणों की आहुति दे दी।

14. श्री कालाचन्द सरकार,
बारपेटा, असम।
(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 10 नवम्बर, 1987)

10 नवम्बर, 1987 को श्री कालाचन्द सरकार, जो असम वन विभाग मानस आखेट रिजर्व में घास काटने वाले के रूप में नियुक्त थे, विभागीय हाथी को ढूंढने के लिए श्री किरण चन्द्र बर्मन महावत के साथ घने जंगल में गए। अचानक पीछे से एक बाघ श्री बर्मन पर झपटा व उनकी गर्दन और बांह पकड़ ली और जमीन पर गिराने के पश्चात घसीटकर दूर ले जाने का प्रयास करने लगा। श्री बर्मन गंभीर रूप से घायल हो गए। श्री कालाचन्द सरकार अपनी जान की परवाह किए बगैर बाघ पर टूट पड़े और जो छोटी-सी खुखरी इनके पास थी उससे बाघ के सिर पर अनेक प्रहार किए। अंततोगत्वा बाघ श्री बर्मन को छोड़कर जंगल में गायब हो गया। श्री कालाचन्द सरकार श्री बर्मन को इंचीले स्थित रेंज कार्यालय में ले गए जहां उनको चिकित्सा सहायता दी गई।

इस प्रकार श्री कालाचन्द सरकार ने खतरे के क्षण में बहादुरी तथा उत्कृष्ट श्रेणी की सूझबूझ का परिचय दिया और अपनी जान को जोखिम में डालकर अपने सहकर्मी की जान को बचाया।

15. जी/160273 एफ० ओ० ई० एम० सत्यपाल सिंह नेगी
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 20 जनवरी 1988)

390 सड़क रख-रखाव प्लाटून (सीमा सड़क संगठन) के ओ० ई० एम० सत्यपाल सिंह नेगी को अहिल्केश-जोशीमठ सड़क को चौड़ा करने व पक्का करने के लिए फार्मेशन कटिंग पर डोजर चलाने के लिए तैनात किया गया था।

20 जनवरी, 1988 को, दोपहर बाद विस्फोट किया गया और उसके बाद श्री सत्यपाल नेगी अपने डोजर से मलबे को साफ करने में लगे थे। दिन के लगभग 15.45 बजे, विस्फोट के फलस्वरूप वृक्ष चट्टान के बड़े-बड़े टुकड़े पहाड़ी के ऊपर से नीचे खिसकने लगे। जीवन तथा सरकारी सम्पत्ति के आसन्न खतरे को देखते हुए, ओ० ई० एम० नेगी ने चिल्ला-चिल्लाकर अपने आदमियों को वहां से भागकर सुरक्षित स्थान पर जाने की चेतावनी दी और साथ ही अपने डोजर को चट्टान गिरने वाले स्थान से हटाने हेतु भी प्रयत्नशील रहे। यद्यपि वे अपना डोजर अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थान पर ले जाने में सफल हुए लेकिन लुढ़क कर आया एक बड़ा पत्थर का गोला उनके सीने में लगा जिसके कारण वे नीचे गिर गए और उनकी मृत्यु हो गयी।

ओ० ई० एम० सत्यपाल सिंह नेगी ने भारी विषमताओं के बीच प्रशंसनीय साहस, उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया और अपने संगठन की सेना की गौरवमयी परम्परा के अनुरूप अपने प्राणों की आहुति दे दी।

16. जी/149773 वाई ड्राइवर यांत्रिक उपकरण श्री आनंद सिंह राणा
(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 1 फरवरी, 1988)

153 फार्मेशन कटिंग प्लाटून (सीमा सड़क संगठन) के ड्राइवर यांत्रिक उपकरण श्री आनंद सिंह राणा वालोंग किबिथू रोड पर स्थित फार्मेशन कटिंग में डोजर पर तैनात थे।

1 फरवरी, 1988 को, ब्लास्टिंग के पश्चात्, जब वे मलबा हटा रहे थे तो एकाएक कार्यस्थल पर चक्रवात आ गया। भयंकर चक्रवात के कारण, पहाड़ से ढीली जमीन और शिला खण्ड, अचानक नीचे गिरने लगे। ड्राइवर यांत्रिक उपकरण श्री राणा ने समय की नाजुकता को महसूस करते हुए, सबसे पहले सभी मजदूरों को सुरक्षित स्थान पर चले जाने के लिए सतर्क किया और इसके पश्चात् अपने डोजर को आगे की ओर ले गये क्योंकि वे जानते थे कि यदि वे डोजर को पीछे की ओर ले गए तो शिलाखण्ड निश्चित रूप से डोजर के ऊपरी सिरे पर गिरेंगे, जिससे इंजन पूरी तरह से बेकाम हो जाएगा, यद्यपि इस बात के पूरे अवसर थे कि श्री राणा मामूली चोटों के साथ अगर चाहते तो वहां से बचकर भाग सकते थे। लेकिन उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना अनुकरणीय साहस व सूझबूझ का परिचय देते हुए डोजर की सुरक्षा

के लिए उसे एक चट्टान के नीचे ले जाने के लिए, ताकि डोजर को भारी नुकसान न पहुंचे, आगे बढ़ाया । जिस समय वे डोजर को आगे बढ़ा रहे थे, उसी समय एक शिलाखण्ड उनके ऊपर पड़ा जिससे घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई ।

ड्राइवर यांत्रिक उपकरण श्री आनंद सिंह राणा ने ऐसी खतरनाक परिस्थितियों में दूसरे लोगों के जीवन की रक्षा तथा सरकारी सम्पत्ति को बचाने के लिए साहस, कर्तव्यनिष्ठा और नेतृत्व का परिचय दिया । इस प्रक्रिया में अपने संगठन की सेना की सर्वोत्तम परम्परा को कायम रखते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया ।

17. जी/163008 डब्ल्यू अधीक्षक भवन व सड़क ग्रेड-II, जय प्रकाश शर्मा,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 12 फरवरी, 1988)

12 फरवरी, 1988 को लगभग दिन के एक बजे 1352 गैरिजन इंजीनियर (सीमा सड़क संगठन) के अधीन इम्फाल जिरीबाम सड़क के 32वें किलोमीटर पर लगे सीमा सड़क संगठन को विद्रोहियों और असामाजिक तत्वों के एक गिरोह ने घेरकर धावा बोल दिया । गिरोह के सभी लोग घातक हथियारों से लैस थे । कैम्प के दोनों ओर की सड़क विद्रोहियों ने घेर रखी थी ताकि वे अपनी कार्यवाही को सुचारू रूप दे सकें ।

जब विद्रोहियों ने कैम्प पर धावा बोला, उस समय 1352 गैरिजन इंजीनियर (सीमा सड़क संगठन) के अधीन 490 सड़क अनुरक्षण प्लाटून के कैम्प प्रभारी अफसर, अधीक्षक, बी/आर ग्रेड-II श्री जय प्रकाश शर्मा विस्फोटक मैगजीन की जांच कर रहे थे । विद्रोहियों ने सीमा सड़क संगठन के सभी कार्मिकों तथा दैनिक वेतन भोगी मजदूरों को निर्दयता व क्रूरता पूर्वक पिटाई की । उन्होंने भवनों को क्षति पहुंचाई तथा कैम्प में पार्क किए हुए वाहनों को आग लगा दी । अपनी सुरक्षा को खोए बिना श्री जय प्रकाश शर्मा ने तुरन्त कार्रवाई की और मैगजीन का दरवाजा बन्द कर दिया । आतंकवादी गतिविधियों और कैम्प में दहशत फैलाने के बाद, विद्रोही विस्फोटी पदार्थों के ढेर को लूटने के लिए श्री जय प्रकाश शर्मा की ओर मुड़े । उन्होंने श्री जय प्रकाश शर्मा को निर्दयता पूर्वक पीटा और धमकी दी कि वे उन्हें जान से मार डालेंगे । उनके इन प्रयासों के बावजूद श्री जय प्रकाश शर्मा ने विद्रोहियों के सामने हार नहीं मानी । श्री शर्मा अपनी खुद की रक्षा व जान की परवाह किए बिना वहां चट्टान की तरह अड़ गए । दृढ़ निश्चयी व साहसी जय प्रकाश शर्मा के सामने उन अवांछित तत्वों की एक न चली और उन्हें अपना इरादा छोड़ना पड़ा । इस तरह से श्री शर्मा ने विस्फोटक पदार्थों के ढेर को लूटने से बचाया ।

इस प्रकार अधीक्षक भवन व सड़क ग्रेड-II श्री जय प्रकाश शर्मा ने अपनी जान पर खेलते हुए साहस और उत्कृष्ट कोटि की कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

18. जी ओ 1684 एल सहायक अभियन्ता (ई० एण्ड एम०) विनोद कुमार कटना,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 23 मार्च, 1988)

सहायक अभियन्ता विद्युत तथा यांत्रिकी विनोद कुमार कटना, 168 फार्मेशन कटिंग प्लाटून केयर 118 सड़क निर्माण कम्पनी (सीमा सड़क संगठन) में कार्यरत थे । नुब्रा घाटी और सियाचिन ग्लेशियर को जाने वाली लेह-खालूका सड़क पर 15500 फुट की ऊंचाई पर दिसम्बर, 1987 से अप्रैल, 1988 तक बर्फ हटाने के कार्य के प्रभारी अफसर थे । मार्च, 1988 और अप्रैल, 1988 के पहले सप्ताह के दौरान, लगातार भारी हिमपात के कारण, खारदुंगला दर्रा और सड़क का एक भाग अवरुद्ध हो गया और 18000 फुट की ऊंचाई पर एक टुकड़ी से सम्पर्क कट गया तथा 6 दिन तक उसमें न तो सड़क मार्ग से और न ही वायु मार्ग से सम्पर्क किया जा सका क्योंकि मौसम काफी खराब था और न ही उसमें अवलाव नजर आता था । ऊपर वाली टुकड़ी के पास मिट्टी के तेल और राशन की कमी थी और कुछेक लोग अस्वस्थ भी थे । नाजुक परिस्थिति में सहायक अभियन्ता (विद्युत व यांत्रिकी) विनोद कुमार कटना ने चार स्थानीय मजदूरों के एक दल के साथ बर्फ से ढके पहाड़ियों पर पैदल चलते हुए 16000 से 18000 फुट की ऊंचाई पर 5 किलोमीटर दूरी तय की तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और आराम परवाह किए बिना बर्फानी तूफान के बीच फंसे लोगों को आवश्यक सामान उपलब्ध कराया । यह कार्य लगातार तीन दिनों अर्थात् 23, 24 और 25 मार्च, 1988 तक जारी रहा, जिससे वहां फंसे जवानों का मनोबल बढ़ा ।

इस प्रकार सहायक अभियन्ता (विद्युत तथा यांत्रिकी) श्री विनोद कुमार कटना ने साहस, दृढ़ संकल्प तथा विपरीत परिस्थितियों में उच्च कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

19. जी/156960 ए अधीक्षक विद्युत/यांत्रिक ग्रेड-II श्री कोठूर रमण मोहनन,

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 19 अप्रैल, 1988)

88 सड़क निर्माण कम्पनी (सीमा सड़क संगठन) के अधीक्षक विद्युत/यांत्रिक ग्रेड-II श्री कोठूर रमण मोहनन को पूर्वी सेक्टर में हुनली अमिनि सड़क पर फार्मेशन कटिंग टीम के कार्य के पर्यवेक्षण हेतु तैनात किया गया था ।

19 अप्रैल, 1988 को लगभग दिन में दो बजे जब एक खड़ी चट्टान को काटने का कार्य चल रहा था तो अधीक्षक मोहनन ने महसूस किया कि अग्रवर्ती ड्रिलर भयभीत तथा डांवाडोल लग रहा था क्योंकि ड्रिलिंग कार्य के लिए खड़ा होने हेतु स्थान बहुत ही कम था । श्री मोहनन तुरन्त ड्रिलर के पास पहुंचे और स्वयं जब हथौड़ा चलाकर उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रयास किया । वे जब ऐसा कर रहे थे पहाड़ी की ओर से एक छोटा भूखंड लुढ़ककर श्री मोहनन पर गिरा । श्री मोहनन को इस बात का पता चल गया कि यह एक बड़े भूस्खलन का संकेत है, लेकिन सूझ-बूझ का परिचय देते हुए शांत रहे । उन्होंने तुरन्त सारी टीम को निर्देश दिया कि वे सभी सुरक्षित स्थान पर चले जाएं और कार्मिकों के बीच होने वाली भगदड़ को रोकने के लिए वे स्वयं उसी प्वाइन्ट पर ड्रिलिंग करते रहे । श्री मोहनन ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बगैर और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय देते हुये, इस बात का ध्यान रखा कि उनके अपने व्यक्ति तथा ड्रिलिंग उपकरण सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिए गए हैं । लेकिन इस प्रक्रिया में उन्हें एक बड़ा बोल्डर आकर लगा और फलतः वे गहरी घाटी की ओर लुढ़के जहां वे बड़े बोल्डरों के बीच फंस गए । श्री मोहनन को अत्यधिक जख्मी हालत में प्रचालकों/दैनिक मजदूरों द्वारा बोल्डरों के नीचे से बाहर निकाला गया ।

इस प्रकार अधीक्षक विद्युत/यांत्रिक ग्रेड-II कोठूर रमण मोहनन ने अपनी जान को जोखिम में डालकर उत्कृष्ट वीरता, उत्तम नेतृत्व व सूझबूझ का परिचय दिया ।

20. श्री जसबीर सिंह (मरणोपरान्त)
जालंधर, पंजाब ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 अगस्त, 1988)

2 अगस्त, 1988 को प्रातः लगभग 10 बजे ज्यों ही श्री जसबीर सिंह, पंजाब एण्ड सिंध बैंक के शाखा प्रबंधक, महल कलांजियन शाखा (जिला जालंधर) में पहुंचे और बैंक भवन के सामने अपनी मोटर साइकिल खड़ी की कि इस बीच पगड़ी पहने दो लुटेरे, जोकि संभवतः आतंकवादी थे, श्री सिंह पर पीछे से झपट । वे उन्हें घसीटकर बैंक के अन्दर ले गए और उनसे नकदी का सेफ खोलने व उन्हें नकदी सौंपने के लिए कहा । उस समय श्री सिंह के पास चाबियों के दो गुच्छे थे, जिसमें एक नकदी के सेफ का था, तथा दूसरा ऐसे सेफ का था, जिसमें कोई नकदी नहीं थी । श्री सिंह ने चालाकी से अपने एक हाथ में नकदी वाले सेफ की

चाबी छुपा ली और चाबी के दूसरे गुच्छे से नकदी वाला सेफ को खोलने लगे । ये चाबियां इनमें सही नहीं लगी और फलतः नकदी वाला सेफ नहीं खुला । देरी होने देख लुटेरे क्रोधित हो उठे और चिल्लाकर कहने कहने लगे कि नकदी का सेफ का ताला अभी तक क्यों नहीं खुला है । श्री जसबीर सिंह ने उनसे कहा कि नकदी का सेफ खोलने के लिए चाबी के दूसरे गुच्छे की जरूरत है और वह गुच्छा मुख्य खजानची के पास है जो अभी तक बैंक नहीं आया है । नकदी लेने के अपने प्रयास में विफल होने पर उनमें से एक लुटेरे ने, जो श्री सिंह की गर्दन पर पिस्तौल ताने खड़ा था, गोली चला दी जिससे श्री जसबीर सिंह नीचे गिर पड़े और तत्काल उनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार श्री जसबीर सिंह ने सूझ-बूझ और अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए बैंक लूटने के प्रयास को विफल करने में अपने प्राणों की आहुति दे दी ।

21. श्री राजेन्द्र सिंह,
जालन्धर, पंजाब ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि : 2 अगस्त, 1988)

2 अगस्त, 1988 को प्रातः को, पंजाब एण्ड सिंध बैंक की सहल बाजियन शाखा के शाखा प्रबंधक श्री जसबीर सिंह इसी शाखा के लिपिक खजांची के पद पर कार्यरत श्री राजेन्द्र सिंह के घर आए और उन्हें नकदी के सेफ की चाबियों का एक गुच्छा सौंपा क्योंकि दूसरी शाखा से जाने के कारण वे बैंक नहीं जा रहे थे । श्री राजेन्द्र सिंह ने कार्यालय में आकर नकदी की चाबी के गुच्छे को अपनी डेस्क की दराज में डाल दिया । लगभग प्रातः 10 बजे उन्होंने दो पगड़ी धारी युवकों को जो संभवतः आतंकवादी थे, शाखा प्रबंधक को बैंक के अन्दर घसीट कर लाते हुए देखा । शाखा प्रबंधक की गर्दन पर पिस्तौल की नोक ताने हुए एक डकैत ने शाखा प्रबंधक को नकदी के सेफ को खोलने के लिए कहा । डकैतों को झांसा देने के उद्देश्य से शाखा प्रबंधक ने नकदी के सेफ में गलत चाबियों का इस्तेमाल किया और डकैतों को बताया कि सेफ के ताले को खोलने के लिए उसे चाबियों के दूसरे सेट की जरूरत है, जोकि मुख्य खजांची के पास है और वे बैंक नहीं आए हैं । क्रोधित डकैत ने जो श्री जसबीर सिंह की गर्दन पर पिस्तौल ताने हुए था, गोली चला दी और शाखा प्रबंधक वहीं जमीन पर ढेर हो गए ।

श्री राजेन्द्र सिंह के पास कुछ करने के लिए केवल चन्द सैकंड ही थे । यदि वे कमजोर व्यक्ति होते तो डकैतों को सहयोग देते और उन्हें चाबियों का दूसरा सेट भी देते जो डेस्क के दराज में छिपा हुआ था । लेकिन निहित खतरे को देखकर, उन्होंने निर्णय लिया कि ये डकैतों को चाबी के दूसरे सेट के बारे से नहीं बताएंगे और न ही उस तथ्य के बारे में बताएंगे कि प्रबंधक ने जानबूझ कर ही नकदी के सेफ को खोलने के लिए गलत चाबी के सेट का इस्तेमाल किया । दोनों डकैतों ने उसी समय श्री राजेन्द्र सिंह के सिर और बाहों के पास चार बार गोली चलाई । वह जमीन पर इस प्रकार ढेर हो गये जैसे वे मर गए हों । आतंकवादी उनको मृत समझकर हड़बड़ी में भाग खड़े हुए ।

इस प्रकार श्री राजेन्द्र सिंह ने बैंक को लूटने के प्रयास को विफल करने में अनुकरणीय साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया ।

सं० 26-प्रेज०-89—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी अति असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए "परम विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट जनरल अशोक कुमार चटर्जी (आई० सी०-6008), वि० से० मे० इन्फैंट्री ।
2. लेफ्टिनेंट जनरल राम मोहन बोहरा (आई सी-6121), महावीर चक्र, कविचत कोर ।
3. लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत (आई०सी०-5316), अ० वि० से० मे०, इन्फैंट्री (सेवानिवृत्त) ।
4. लेफ्टिनेंट जनरल विजय कुमार (आई०सी०-5319), सेना सेवा कोर ।
5. लेफ्टिनेंट जनरल दीवान श्रीराम साहनी (आई०सी०-7314), से० मे०, इंजीनियर्स ।
6. लेफ्टिनेंट जनरल सुशील कुमार पिल्लै (आई०सी०-7325), इन्फैंट्री ।
7. लेफ्टिनेंट जनरल सतीश कुमार बाहरी (आई०सी०-6117), आर्टिलरी ।
8. लेफ्टिनेंट जनरल कृष्ण दास कपूर (एम० आर०-0610), सेना चिकित्सा कोर (सेवानिवृत्त) ।
9. वाइस एडमिरल रवि प्रकाश साहनी (00136 एच) ।
10. वाइस एडमिरल राधे श्याम शर्मा, अ० वि० से० मे०, वि० से० मे० (60027 जैड) ।
11. वाइस एडमिरल जगत नारायण मुकुल, अ० वि० मे० मे० (50027 बाई) ।
12. एयर मार्शल पृथी सिंह, अ० वि० से० मे० और बार (4480) उड़ान (पाइलेट) ।
13. एयर मार्शल मोहिन्द्र सिंह बावा, अ० वि० मे० मे०, वा० से० मे० (4494) उड़ान (पाइलेट) ।
14. एयर मार्शल गुरशरण सिंह, अ० वि० मे०, में वा० से० मे०, वि० से० मे० (4263) वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक) (सेवानिवृत्त) ।
15. एयर वाइस मार्शल डेजिल कौलर, कीर्ति चक्र, अ० वि० से० मे०, वीर चक्र (4805) उड़ान (पायलट) ।

सं० 27-प्रेज०-89—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्ति को उसकी अति असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए "परम विशिष्ट सेवा मेडल" का बार प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

मेजर जनरल नरेश कुमार (आई० सी०-5854), प० वि० से० मे०, आर्टिलरी (सेवानिवृत्त) ।

सं० 28-प्रेज०-89—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए 'अति विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जनरल अश्वनी कुमार दीवान (आई० सी०-7024), वीर चक्र, कर्वाचत कोर ।
2. मेजर जनरल विजय कुमार मधोक (आई० सी०-6132), वि० से० मे०, इन्फैंट्री ।
3. मेजर जनरल प्रेम लाल फुकरेला (आई०सी०-8104), से० मे०, इन्फैंट्री ।
4. मेजर जनरल शेर अमीर सिंह (आई० सी०-8401), इन्फैंट्री ।
5. मेजर जनरल यशवन्त देव (आई० सी०-6640), सिगनल्स ।
6. मेजर जनरल (श्रीमती) निर्मल आहूजा (एम० आर०-1172), वि० मे० मे०, सेना चिकित्सा कोर (सेवानिवृत्त) ।
7. मेजर जनरल (लोकल) बेलाचेरी जगदीशन सुन्दरम (आई० सी०-10586), वि० से० मे० विद्युत और यांत्रिक इंजीनियरी ।
8. ब्रिगेडियर अशोक भान (आई० सी०-12876), इन्फैंट्री (मरणोपरान्त) ।
9. ब्रिगेडियर गुरिंदर कुमार नन्दा (आई० सी०-11039), इन्फैंट्री
10. रियर एडमिरल पल्लासन परमेश्वर अय्यर शिवमणि, नौ० से० मे० (00279 एच) ।
11. रियर एडमिरल कनकीपति अप्पला सत्यनारायण जगपति राजू, नौसेना मेडल (00304 आर) ।
12. रियर एडमिरल बिमलेन्दु गुहा (00317 बाई) ।

13. रियर एडमिरल जगदीश जनार्दन बक्शी, वि० से० मे० (50085 बी)।

14. कमोडोर अडोल्फ ब्रीट्टो, वि० से० मे० (40143 एच)।

15. कमोडोर वर्गीज कोइथारा, वि० से० मे० (60086 एच)।

16. कमोडोर पुरुषोत्तम दत्त शर्मा, नौ० से० मे० 1(00429 जेड)।

17. कमांडोर पेरीकुलम कृष्णैयर रामास्वामी (70061 बी)।

18. कैप्टन श्रीनिवास परवाचारी गोपालचारी, वि० से० मे० (00713 डब्ल्यू), भारतीय नौसेना।

19. एयर मार्शल अमरजीत सिंह बहल (एम० आर०-586), वि० से० मे०, सेना चिकित्सा कोर।

20. एयर वाइस मार्शल ओम प्रकाश सूरी (4784), चिकित्सा।

21. एयर वाइस मार्शल केशव चन्द्र शर्मा (4932), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

22. एयर वाइस मार्शल प्रताप राव, वा० से० मे० (5188), उड़ान (पाइलट)।

23. एयर कमोडोर हमीद मुहम्मद शाहुल, वि० से० मे० (5461), उड़ान (नेवीगेटर)।

24. एयर कमोडोर मनमोहन वामन देसाई, वि० से० मे० (5524), लेखा।

25. एयर कमांडोर हरजीत सिंह धुमन, वा० से० मे० (5692), उड़ान (पाइलट)।

26. एयर कमोडोर दलीप सिंह दहिया (5866), उड़ान (पाइलट)

27. एयर कमोडोर विनोद कुमार वर्मा, वा० से० मे० (6528), उड़ान (पाइलट)।

28. एयर कमोडोर फिलिप राजकुमार, वा० से० मे० (6748), उड़ान (पाइलट)।

सं० 29-प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए "अति विशिष्ट सेवा मेडल का बार" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :-

1. मेजर जनरल निर्मल सोंधी (आई० सी०-6130), वि० से० मे० आर्टिलरी (सेवानिवृत्त)।

2. ब्रिगेडियर ध्रुवा ज्योति मुखर्जी (एम० आर०-1002), अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, सेना चिकित्सा कोर।

3. एयर कमोडोर पृथ्वी सिंह बरार, अ० वि० से० मे०, वा० से० मे० (6007), उड़ान (पायलट)।

सं० 30-प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित अधिकारी को उनकी अति असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए "सर्वोत्तम युद्ध सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

लेफ्टिनेंट जनरल अमरजीत सिंह कलकट (आई० सी०-7347), अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।

सं० 31-प्रेज/89-राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण विशिष्ट सेवा के लिए "उत्तम युद्ध सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जनरल श्रीकृष्ण विश्वम्बर सरदेशपांडे (आई० सी०-7899), अ० वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।

2. कार्यकारी रियर एडमिरल प्रेमवीर सरन दास, वि० से० मे० (00393-टी)।

3. कमोडोर सुन्दरम पद्मशंकर (00485)ए)।

4. कैप्टन कमल शमशेर राय (00613 टी), भारतीय नौसेना।

5. एयर कमोडोर मनमोहन सिंह वासुदेव, वा० से० मे० (6128), उड़ान (पायलट)

सं० 32-प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्ति को उसकी उत्कृष्ट वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कर्नल विजय कुमार बक्शी (आई० सी०-16709) 6/8 गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 2 मार्च, 1989)

2 मार्च, 1989 को कर्नल विजय कुमार बक्शी की कमान में 6/8 गोरखा राइफल्स की एक कम्पनी आतंकवादियों का पता लगाने और उनके ठिकानों को नष्ट करने में लगी हुई थी। वानी सेक्टर में नयाल लगून क्षेत्र में आतंकवादियों से कम्पनी की मुठभेड़ हुई। शुरू में छुट-फुट गोलीबारी से आरंभ हुई यह मुठभेड़ तेजी पकड़ती गई। आतंकवादियों ने अनेक दिशाओं से कम्पनी पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी और यह लड़ाई 24 घण्टे से भी अधिक समय तक जारी रही। मुठभेड़ के दौरान शुरू में ही जख्मी हो जाने के बावजूद इस पूरी कार्रवाई में बहादुर कर्नल बक्शी स्वयं कंपनी की कमान संभाले रहे। अपनी जान के खतरे के बावजूद वे मोर्चे पर डटे रहे और आतंकवादियों को पीछे हटने पर मजबूर करते रहे। उनके शौर्य और साहस से प्रेरित होकर उनकी कम्पनी ने आतंकवादियों पर दबाव बनाए रखा जिससे बड़ी संख्या में आतंकवादी हताहत हुए और उन्हें भारी क्षति उठानी पड़ी। अंत में आतंकवादियों की गोली से घातक रूप से घायल हो जाने के कारण वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्रवाई में कर्नल विजय कुमार बक्शी ने आतंकवादियों का सामना करते हुए अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय तथा उत्कृष्ट युद्धकौशल का परिचय दिया।

सं० 33-प्रेज/89—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्ति को उसकी वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

5746182 हवलदार गुमान सिंह गुरुंग 6/8 गोरखा राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि: 2 मार्च, 1989)

2 मार्च, 1989 को कर्नल विजय कुमार बक्शी की कमान में 6/8 गोरखा राइफल्स की एक कंपनी आतंकवादियों का पता लगाने और उनके ठिकानों को नष्ट करने में लगी हुई थी। वानी सेक्टर में नयाल लगून क्षेत्र में आतंकवादियों के कैम्प के साथ कम्पनी की मुठभेड़ हुई। शुरू में छुटपुट गोलीबारी से आरंभ हुई यह मुठभेड़ तेजी पकड़ती गई। आतंकवादियों ने अनेक दिशाओं से कम्पनी पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी और यह लड़ाई 24 घण्टे से भी अधिक समय तक जारी रही। हवलदार गुमान सिंह गुरुंग कम्पनी कमान अफसर के रेडियो आपरेटर थे। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने न केवल रेडियो संचार व्यवस्था जारी रखी बल्कि नजदीक से गोली चलाकर 3-4 आतंकवादियों को मार गिराया। अपने जीवन के खतरे की परवाह किए बिना उन्होंने कम्पनी के सामने बहादुरी का अनुपम उदाहरण रखा। अंततः आतंकवादियों द्वारा बहुत नजदीक से गोली मार दिए जाने के कारण उस बहादुर नौजवान ने वीरगति प्राप्त की।

इस पूरी कार्रवाई के दौरान हवलदार गुमान सिंह गुरुंग ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस एवं वीरता का परिचय दिया।

सु० नीलकण्ठन, निदेशक

योजना आयोग

नई दिल्ली, दिनांक 24 अक्तूबर 1988

आदेश

सं० ए० 19 (533)/88 प्रशासन 2 —राष्ट्रपति, योजना आयोग में एक परिवीक्षाधीन वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी तथा इस आयोग के विद्युत तथा ऊर्जा प्रभाग में नियुक्त, श्री भूपेन्द्र सिंह राल्ते की सेवाएं तत्काल समाप्त करते हैं।

एस० एन० वरदराजन, अवर सचिव

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 13 मार्च 1989

शुद्धि पत्र

सं० ई० 11015/36/88 हिन्दी —सूचना और प्रसारण मंत्रालय के दिनांक 24-2-89 के समसंख्यक संकल्प में क्रम संख्या 10 में श्री केशव पांडे, अवकाश प्राप्त महानिदेशक, आकाशवाणी के स्थान पर "श्री केशव पांडे, अवकाश प्राप्त उप महानिदेशक, आकाशवाणी" तथा क्रम संख्या 15 में श्री द्वारिका प्रसाद जी० वेद के स्थान पर "श्री द्वारकादास जी० वेद" पढ़ा जाए।

श्याम कृष्ण शर्मा, संयुक्त सचिव

श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 14 मार्च 1989

सं० क्यू० 16011/1/88 डी० एम० ए० (डब्ल्यू० ई०)—केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के नियम और विनियम के नियम 4(iii) के साथ पठित नियम 3-क के अनुसरण में, भारत सरकार श्रीमती कुशल सिंह, आई० ए० एस०, कार्यपालक निदेशक, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, जीवनदीप, संसद मार्ग, नई दिल्ली को 27 अक्तूबर, 1988 से एक वर्ष की अवधि के लिए केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड में सहयोजित सदस्य के रूप में नियुक्त करती है।

ए० के० चन्दा, उप सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1989

No. 22-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Maha Vir Chakra' to the undermentioned person for acts of conspicuous galantry :—

CAPTAIN PRATAP SINGH (SS-31468), ARTILLERY.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 26th May, 1988)

Captain Pratap Singh was deployed as an Observation Post Officer in the Siachen area in April, 1988 The adversary made repeated attempts to retake a key post vital for our defences of Siachen, without success Their last attempt to take this key post was on 9th May, 1988 when they fixed four ropes and a ladder system on the ice wall below the post for the purpose. This attack was successfully beaten back by our forces. The ropes and ladder system fixed by the adversary, however, remained in position, making it possible for them to use it again in their fresh attempts to take the post. It was imperative that the fixed ropes were cut and the ladder unfixed to prevent fresh attacks.

On the 18th May, 1988, Second Lieutenant Ashok Chaudhry was able to reach and cut two of the four ropes. On the 26th May, 1988, it was decided to cut the remaining two fixed ropes and unfix the ladder. Captain Pratap Singh undertook this mission with the help of a jawan descending down the ice wall. On reaching the location, Captain Pratap Singh found a large quantity of ammunition and grenades lying at the head of the ropes. While examining the same, a grenade booby trap of the adversary exploded, severely wounding Captain Pratap Singh in his right arm and chest. Despite being severely wounded, the brave officer crawled forward to the fixed ropes and cut them with his knife. He then unfixed the ladder system and let it fall down the ice wall. Then the gallant officer inched back to his own rope to come up the ice wall to return to the post but collapsed due to his severe wounds and made the supreme sacrifice of his life for the nation.

Captain Pratap Singh thus displayed conspicuous gallantry in eliminating a grave threat to a key post of our vital defence of Siachen at the cost of his life.

No. 23-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Vir Chakra' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. FLIGHT LIEUTENANT ABDUL NASIR HANFEE (16077), FLYING (PILOT).

(Effective date of the award : 23rd September, 1987)

On the 23rd September 1987, Flight Lieutenant Abdul Nasir Hanfee was launched in Siachen area to assist the Army. Taking off in a short time, he immediately undertook the much needed Army support missions in the area. At a time when all our forward posts were under attack by the adversary and the demand for ammunition and other logistic support came up, Flt. Lt. Hanfee rose to the occasion and accepted the challenge. Flying from sunrise to sunset in marginal weather conditions with frequent snow blizzards and white-out conditions and frequent adversary shelling of the posts, he achieved 14 to 15 sorties a day for three continuous days, with total disregard to his personal safety. He single handedly managed to provide the much needed logistic support for two days which was a big morale booster for our troops in Siachen Glacier area, fighting the adversary in a hostile terrain.

In a restricted area where the guns were required to fire continuously to meet the adversary's challenge, he also showed exceptional professionalism by evacuating 38 casualties in a single day from the area with undue disregard to his personal safety.

Thus Flight Lieutenant Abdul Nasir Hanfee exhibited high degree of professional skill and courage in the face of the adversary.

2. 5345531 RIFLEMAN SANJEEV GURUNG, 4 GORKHA RIFLES.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 23rd September, 1987)

On the 12th September, 1987, Rifleman Sanjeev Gurung, as a part of his platoon, was inducted into an important post of the Bilafondla complex of the Siachen Glacier. On the night of 23rd-24th September, 1987, the adversary launched a determined attack on his post preceeded by heavy artillery and mortar shelling. Rifleman Gurung and his comrades put in a determined fight and beat back the adversary's attack.

Again on the night of 24th-25th September, 1987, the adversary put in a determined attack on the post. Rifleman Gurung and his comrades put up a resolute fight and beat back the attack. At about 0215 hours the adversary put in a second attack on this post. As the fierce battle was continuing, at one stage, Rifleman Gurung finished his ammunition. While he was busy filling his magazines, he saw two adversary's soldiers, who had managed to climb up, advancing towards him. Keeping his cool, Rifleman Gurung picked up an empty jerrican lying next to him and hurled it at the advancing adversary's soldiers. As he saw the adversary's soldiers faltering in their advance due to this, he charged on to them with his empty rifle and succeeded in killing one with his rifle butt. During this the other adversary's soldier shot him in the back and Rifleman Gurung was fatally injured and died soon after. His aggressiveness stopped the adversary in their tracks and broke their momentum.

Rifleman Sanjeev Gurung displayed remarkable courage and valour and made the supreme sacrifice in the highest tradition of the Indian Army.

3. SECOND LIEUTENANT RAJINDER SINGH NAGAR (IC-43836), 16 SIKH.

(Posthumous)

(Effective date of award : 17th October, 1987)

Second Lieutenant Rajinder Singh Nagar was deployed in Sri Lanka as part of the Indian Peace Keeping Force. His battalion marched out on the 17th October, 1987 from road junction for linking up with Jaffna Fort En-route, they came under heavy militant fire from Manippe. The whole battalion was pinned down. In such circumstances, Second Lieutenant Nagar, took initiative and urged all the men to move forward and himself went ahead of the column braving all odds. He spotted heavy machine gun position from where volume of fire was coming. He charged the militant heavy machine gun position with grenade and after the first grenade exploded, he stood upright and charged the position physically. The militants took a close aim and shot this brave young soldier.

The courage shown by the young officer, enthused the whole battalion with a fighting spirit. It did not look back and carried out all the given tasks and was among the first few in 41 Brigade to contact Jaffna Fort and carry out further task.

Second Lieutenant Rajinder Singh Nagar displayed courage and valour in the face of the militants and laid down his life in the highest tradition of the Services

4. MAJOR RATNESH KUMAR CHATURVEDI (IC-34499), 5 RAJPUTANA RIFLES.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 18th October, 1987)

On the 18th October, 1987, 5 Rajputana Rifles was tasked to link up with 1 Maratha Light Infantry in Jaffna Fort. When the force reached the final stages of link up, the militants opened up heavy machine guns and light machine guns halting the advance. One company leading the advance took position and returned fire. There was no let up in militants' fire. The time was running out and ammuntiion running low. Therefore, Major Ratnesh Kumar Chaturvedi, personally led his company's assault at the militants' gun position. While charging he got a burst on his chest.

Unmindful of the bleeding and his personal safety, Major Chaturvedi continued moving towards the militants' heavy machine gun and kept on coaxing his men to rush to the militants' location. The militants ran for their life vacating the post. The company kept firing at the fleeing militants killing six, two of them by Major Chaturvedi. Despite severe injuries, he refused to be evacuated. However, due to serious nature of injuries and loss of blood, he lost consciousness and succumbed to his injuries. The companies ultimately completed task of link up with 1 Maratha Light Infantary in time.

Major Ratnesh Kumar Chaturvedi thus displayed conspicuous courage and valiant leadership in the face of the militants.

5. WING COMMANDER CHANDRA DATT UPADHYAY (11336), FLYING (PILOT).

(Effective date of award : 19th October, 1987)

Wing Commander Chandra Datt Upadhyay was deployed as the 'Type Force Commander' of the Pratap Fleet of Indian Air Force Element of the Indian Peace Keeping Force in Sri Lanka from the 19th October, 1987 to the 3rd November 1987, when the IPKF was engaged in fierce battle with the militants for control of Jaffna town.

On the 19th October, 1987 and again on the 20th October, 1987, Wing Commander Upadhyay carried out sorties to take urgent rations petrol, oil and ammunition for the advancing Army column and evacuate casualties. He carried out the mission by landing on an open field which was under fire from all sides.

On the 21st October, 1987, a single helicopter special mission of para commando force was dropped at Achuvail and then para commandos & prisoners were picked up from Puttur West. During take-off from the ground at Puttur West, his helicopter was fired at by the militants by machine gun & rockets. One rocket damaged the trailing edge of a rotor blade, causing severe vibration. The helicopter went out of control and started descending rapidly. Wing Commander Upadhyay showing great professional skill controlled the helicopter only a few feet above the ground and turned back and landed the stricken helicopter in the same field. All the passengers and crew took shelter in ditches and once the cross fire ceased, he inspected the helicopter. Since the damage was very light, he re-started the helicopter, boarded the passengers and managed to fly it back at low speed to the airfield, thus saving valuable lives and a helicopter.

Wing Commander Chandra Datt Upadhyay thus displayed exceptional professional skill extreme devotion to duty and courage in the face of the militants in Sri Lanka.

6. JC-149484 NAIB SUBEDAR KHUSHI RAM 16 KUMAON.

(Posthumous)

(Effective date of award : 25th January, 1988)

On the 25th January, 1988, Naib Subedar Khushi Ram alongwith his platoon was detailed to carry out a search and destroy mission in Area Murrukkandivu in the Valachenai Sector of Sri Lanka. Displaying remarkable degree of courage and temperament, Naib Subedar Khusi Ram scored a direct hit, which silenced the medium machine gun of the militants. Three militants were thrown away from the gun emplacement as a result of the impact of the HE Round, whilst two were seen escaping. The Junior Commissioned Officer then asked the section to cover his move and himself accompanied by Naib Daya Ram went forward to capture the medium machine gun.

The fearless and valiant Junior Commissioned Officer reached within 50 metres of the abandoned medium machine gun when he was hit with a burst of auto rifle fire in his chest. He was fatally wounded.

Naib Subedar Khushi Ram thus displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants and made a supreme sacrifice in the highest tradition of the Army.

7. CAPTAIN JAIDEEP SENGUPTA (IC-41508), 9 PARA COMMANDO.

(Effective date of award : 5th February, 1988)

On the 5th February, 1988, during an operation in area Tunnukkai, Captain Jaideep Sengupta, Troop Commander Number 3 Assault Troop, was tasked to conduct a search and destroy mission on Road Tunnukkai—Mankulem. Despite heavy automatic fire of the militants, he personally led a small party of five men and successfully out flanked the militants. He suffered severe wounds in his stomach, chest and thigh caused by automatic rifle and grenade fire.

Undaunted by these wounds and heavy loss of blood, he maintained constant pressure on the militants, pinning them down by fire while manoeuvring another squad of five men behind their position. It was only after the militants had fled leaving behind their dead that Captain Sengupta allowed himself to be evacuated

Captain Jaideep Sengupta thus displayed conspicuous courage, valour and exemplary leadership in the face of the militants.

8. 5043176 RIFLEMAN RAJENDER BAHADUR THAPA 1 GORKHA RIFLES.

(Effective date of award : 16th March, 1988)

On the night of 16th-17th March, 1988, Rifleman Rajender Bahadur Thapa was a member of the force tasked for a cordon and search mission of village Pannai, approximately one mile east of Vellankulam in Sri Lanka. Although heavily surrounded by armed militants who continuously kept firing at his position, Rifleman Thapa remained undeterred and kept them all at bay single handed for 17 hours. In the intense exchange of fire fight which ensued, Rifleman Thapa killed two hardcore militants and wounded a few others.

Rifleman Rajender Bahadur Thapa thus displayed exemplary courage in the face of the militants.

9. LIEUTENANT COLONEL ABJIT SINGH SEKHON (IC 23970) 7 MADRAS

(Posthumous)

(Effective date of award : 13th April, 1988)

Lieutenant Colonel Abjit Singh Sekhon Commanding Officer of a battalion was deployed in Sri Lanka as a part of the Indian Peace Keeping force. On the 13th April 1988, on receiving information about location of an arms cache at a place called Vannerikulam as also presence of some hardcore militants, he exercised good imagination and calculated risk in approaching the target areas in Vehicles along a hitherto unmapped and sparsely used track. He reached his target areas undetected and completely surprised the militants. In this action, Lieutenant Colonel Abjit Singh Sekhon who was guiding the column killed two hardcore militants, one whom was found to be the area leader.

Again on the 21st April, 1988, when information was received about the presence of 10/14 militants in village Urithirapuram, he gethered two platoons and alongwith another officer, personally led the column to the site of the militants. The party came under intense fire from the militants. He jumped out of his vehicle and despite intense militant fire, organised his party and returned the fire. He personally shot dead one militant and wounded another. It was at this stage of encounter that Lieutenant Colonel Sekhon was hit by a militant's bullet through the chest and died on the spot.

Throughout the operation, Lieutenant Colonel Abjit Singh Sakhon displayed gallantry and valour in the face of militants and made the supreme sacrifice.

10. SECOND LIEUTENANT ASHOK CHOUDHARY (IC-44694), ARMY SERVICE CORPS.

(Effective date of award : 18th May, 1988)

On the 15th May, 1988, Second Lieutenant Ashok Choudhary took over as the post commander of a key post in Bilafondla complex of Siachen Glacier. On the 9th May, 1988, the adversary in its last attempt to re-take the post had fixed four ropes and ladder system on the ice wall. This attack was successfully beaten back by our brave men. The ropes and ladder system, however, remained in position, making it possible for it to re-use them in any fresh attempts to take the post.

On the 18th May, 1988, despite inclement weather, it was decided to descend down the forward ice wall and cut the fixed ropes. Second Lieutenant Ashok Choudhary alongwith Rifleman Kunwar Singh rappelled down the steep ice wall 400 feet below and with utmost speed proceeded to locate the ropes on the face of the ice wall. Second Lieutenant Choudhary located them hanging by the belaying rope. He cut one rope with his knife. Weather was lifting rapidly and the team was about to be exposed to adversary's observation on the forward slope. Despite the threat of being fired upon, the officer moved on to the second rope and cut it. By cutting two ropes, Second Lieutenant Choudhary greatly minimised the possibility of a surprise attack by the adversary.

Thus Second Lieutenant Ashok Choudhary displayed conspicuous courage and valour in the face of the adversary.

11. 4068303 RIFLEMAN KUNWAR SINGH, 14 GARHWAL RIFLES.

(Effective date of award : 18th May, 1988)

The adversary had made repeated attempts to retake a key post in Bilafondla complex of Siachen Glacier without success. Their last attempt was on the 9th May, 1988 during which they fixed four ropes and a ladder system on the ice wall below the post. This attack was also successfully beaten back by our forces.

The ropes and ladder system fixed by the adversary, however, remained in position, making it possible for them to use it again in their fresh attempts to take the post. On the 18th May, 1988, it was decided to descend down on the forward ice wall and cut the fixed ropes. Rifleman Kunwar Singh Volunteered to undertake the hazardous mission of rappelling down the ice wall and cutting the ropes alongwith Second Lieutenant Ashok Choudhary, Rifleman Kunwar Singh anchored himself on the ice wall and belayed Second Lieutenant Ashok Choudhary enabling him to cut one rope Despite the threat of being fired upon by the adversary the gallant jawan continued to hold anchor and belay the officer enabling him to cut the second rope.

On the 26th May, 1988, it was decided to cut the remaining ropes. Rifleman Kunwar Singh again volunteered to carry out the mission alongwith Captain Pratap Singh. Rifleman kunwar Singh anchored and belayed Captain Pratap Singh so that the officer could cut the ropes and unfix the ladder. In the process of cutting the ropes, Captain Pratap Singh was fatally injured and died on the rope. Undeterred by the death of his leader, Rifleman Kunwar Singh secured the body of Captain Pratap Singh with ropes and performed the arduous task of pushing the body up back to the post.

Rifleman Kunwar Singh thus displayed conspicuous courage and valour in the face of the adversary.

12. FLIGHT LIEUTENANT NICODEMUS MANOHAR SAMUEL (17449), FLYING (PILOT)

(Effective date of award : 22nd June, 1988)

On the 22nd June, 1988, Flight Lieutenant Nicodemus Manohar Samuel was detailed for a special task involving winching down of IPKF reconnaissance party in the most difficult and thickly vegetated terrain in Mullaitivu area in Sri Lanka. This operation involved hovering over an area which was expected to be infested with hardcore militants. During the execution of this mission, his helicopter came under heavy ground fire from the surrounding area. However, with utmost dedication and total disregard to personal safety, Flight Lieutenant Samuel continued to hover till the recce party was retrieved by winching. In the resultant ground fire, the helicopter sustained extensive damage and some of the crew members and the troops on board were injured. In spite of being subjected to heavy ground fire, Flight Lieutenant Samuel kept his cool and continued to fly his helicopter in the damaged condition till his mission was completed. He also displayed excellent airmanship by correctly assessing the damage caused to the helicopter and flying this crippled machine safely to the nearest helipad, thereby avoiding further damage to his helicopter and also to render immediate medical aid to the injured troops/crew.

In the whole operation, Flight Lieutenant Nicodemus Manohar Samuel showed courage and professional skill of extremely high order, with total disregard to personal safety in the face of the militants.

No. 24-Press/89.—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. 1553695-N SAPPER, OEM AJMER ALI.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 22nd March, 1987)

Khardungla Pass at an altitude of 18000 feet on Leh-Chalunka Road in Ladakh, got blocked due to continuous and heavy snow fall from 15 to 17th March, 1987. On the 22nd March, 1987, Sapper, Operator Excavating Machinery Ajmer Ali 168 FCP care 113 RCC, BRO, was detailed for snow-clearance. The weather was extremely cloudy and it was snowing continuously. Braving harsh climatic conditions in Sub-zero temperature in rarefied atmosphere and icy winds, Supper, OEM Ajmer Ali worked relentlessly with great dedication in execution of the vital task to clear the main line of communication across the Glacier Bridge so that troops on the Northern side could get the required assistance and logistic support. Due to continuous snow-fall, the labourers working alongwith him, apprehending danger to their lives, abandoned the site. Undeterred and working in utter disregard to his personal safety, this brave operator, however, continued to work with great zeal and fortitude exhibiting undaunted devotion to duty and exemplary sense of pride in his work. He was burried in an avalanche alongwith the dozer while engaged in the operation.

Sapper, OEM Ajmer Ali displayed commendable perseverance and exceptional courage in the face of heavy odds and difficult circumstances.

2. SHRI PHU DORJEE,
MYSORE,
KARNATAKA.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 24th May, 1987)

Shri Phu Dorjee who was the first Indian to scale Mount Everest without artificial oxygen in 1986 and who had climbed several other peaks in India besides the Everest, volunteered for the Assam Rifles Kanchenjunga. Expedition held between January, 1987 to May, 1987. The summit party under his leadership took the challange of scaling the Kanchenjunga, the highest peak in India and the third highest in the world from its North East Spur route, which is recognised as one of the most difficult climbs in the world; even worse than the route to Mount Everest itself. On the 24th May, 1987, against all odds of awesome weather, strong blizzards and frequent avalanches, first summit party of three members, led by Shri Dorjee made an attempt to reach the summit. However, radio contact between his party and the base camp was lost and their having scaled the Kanchenjunga was confirmed only when the second summit party found their prayer flags just 25 feet below the summit. Shri Dorjee and other members of his team were in all probability blown away by fierce blizzards and thus met an icy death on 24th or 25th May, 1987.

Shri Phu Dorjee displayed exemplary courage, determination, professional skill and above all, exceptional devotion to the cause of mountaineering. His record of having climbed Mount Everest and Mount Kanchenjunga without artificial oxygen makes him a harbinger in the annals of mountaineering history.

3. 1064034 ACTING LANCE DAFADAR KRISHAN DEV KUSHWAH, ARMOURED CORPS.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 26th July, 1987)

On the 26th July, 1987, Acting Lance Dafadar Krishan Dev Kushwah was detailed as the driver of a Jonga to take the Paediatrician of Military Hospital Babina, Major Arvind Gupta to Military Hospital, Jhansi and back. While returning at around 2300 hours, the frontright wheel of the vehicle got punctured on a deserted stretch of road. Both the officer and Acting Lance Dafadar Krishan Dev Kushwah got down to change the punctured tyre in total darkness. As they were putting back the punctured tyre and tools into the vehicle, five dacoits armed with iron rods and a country made pistol appeared and attacked them. Major Arvind Gupta received an iron rod below on his head and fell down. Acting Lance Dafadar Kushwah stood up to the challenge of the armed dacoits and made valiant affort to defend the felled officer and his family with the handle of the lifting jack of the vehicle. However, being grossly outnumbered, he too fell after receiving a few powerful belows. Just than one of the dacoits pulled out a country made pistol and as he was about to fire at the near unconscious officer lying on the ground. Lance Dafadar Kushwah, showing exceptional courage and utter disregard of the obvious consequences, threw himself in between and received the full blast of the charge on the front of his body, at point blank range. He later succumbed to the injuries.

Acting Lance Dafadar Krishan Dev Kushwah, thus, displayed conspicuous bravery, valour and spirit of self sacrifice beyond the call of duty.

4. 1281723 HAVILDAR PREM NATH RAI, ELECTRICAL AND MECHANICAL ENGINEERING

(Posthumous)

(Effective date of the award : 5th December, 1987)

On the 5th December, 1987, Havildar Prem Nath Rai of 833 field workshop Company, while on annual leave at his village Dehari, Shahabad (Bihar), was working in his fields. Suddenly, he learnt that a gang of dreaded dacoits armed with lethal weapons had entered the house of his neighbour with the intention of committing robbery. He responded to the need of the hour, caught hold of a rifle from one of his neighbours, gathered a small group of villagers and motivated them to meet the situation courageously. Thereafter, he positioned them on all the likely exit routes and positioned himself on the most likely exit route.

As the dacoits came out of the village after having con mitted the crime and appeared on the most likely exit ro where Havildar Rai had positioned himself, he challeng the dacoits. Havildar Rai fought a pitched gun battle wi dacoits for about one hour and 30 minutes. In the e change of fire while he killed two of the dacoits and injur a few, he too was hit by a bullet, fired by dacoits on h head and died instantaneously on the spot.

Havildar Prem Nath Rai, thus, displayed conspicuo gallantry. His action to face the armed dacoits was w beyond the call of his duty and he sacrificed his life in t best tradition of the Indian Army.

5. SHRI ASHOK KUMAR SHARMA, JUNAGAD (GUJARAT)

(Effective date of the award : 27th January, 1988)

On the 27th January, 1988, Forest Beat Guard Shri R. I Dar of Pilipat Beat of the Gir West Division had to fi in self-defence on a group of miscreants engaged in poacl ing of wood, resulting in death of one of the miscreant Relations and other members of the community of the dea poacher were enraged by the incident and came in a mc of 40-50 persons to attack and kill the family members c the Beat Guard and the Forester. Shri Ashok Kuma Sharma, Deputy Conservator of Forests, Gir West Divisio sensing danger to the life of the Beat Guard and his famil tried to protect them. 4-5 persons of the mob attacked hir and stabbed him seriously. Although he was injured an bleeding, he did not run away from the spot without seein to the safety of the family of his subordinate. He wa taken to hospital in a critical condition, was operated upo by a team of doctors and luckily saved.

Shri Ashok Kumar Sharma, thus, showed courage an fortitude in the most adverse situation where he could hav lost his life.

6. SHRI SHAKTISINH SAMANTSINH VISANA, JUNAGADH, (GUJARAT).

(Posthumous)

(Effective date of the award : 27th January, 1988)

On the 27th January, 1988, a Beat Guard Shri R. K. Da who was on patrolling duty in the Pilipat Beat of the Gi Sanctuary was assaulted by a group of wood poachers. The beat guard opend fire in self-defence and as a result one o the poachers was killed. The relations and other community people of the dead poacher got enraged and a mob of 40-5 persons moved towards the quarters of the beat guard and the forester with the intention of killing their family members. The Deputy Conservator of Forests, Shri Ashok Kumar Sharma who had gone to the guard's quarters to protect his family members was stabbed by someone from the mob. Shri Shaktisinh Samantsinh Visana who was working as the Guest House Manager, Sasan and was accompanying Shri Sharma, on sensing danger to the family members of the forest beat guard and his superior, in a protective impulse, caught hold of the miscreant who in turn stabbed Shri Visana repeatedly. Shri Visana succumbed to his injuries on the spot.

Shri Shaktisinh Samantsinh Visana showed exemplary courage and sacrificed his own life in the process of saving the life of his superior and family members of his colleague from an infuriated mob of wrong doers.

7. SHRIMATI JOSHODA PAL, NORTH-24-PARGANAS WEST BENGAL.

(Posthumous)

(Effective date of the award : 9th February, 1988)

On the 9th February, 1988, at about 9.30 a.m., a Passenger train was approaching Hridaypur Station having left Madhyamgram in North 24-Parganas district. At that time a child of about 3½ years was crossing the railway line along which the train was coming. A large number of people were watching the incident helplessly and none could dare come forward to save the poor child except raising hue and cry in alarm which attracted Shrimati Joshoda Pal, a maid servant of a nearly locality who was than busy in washing utensils. Shrimati Pal at once rose to the situation and rushed to the spot and threw herself over the line,

hough she succeeded in having the child, she could not ndrew herself from the track and was runover by the n.

Shrimati Joshoda Pal, a poor house-wife who lived from id to mouth with big family, set a rare example of cou- e and self-sacrifice for a noble cause.

8. WING COMMANDER DALJIT SINGH MINHAS (11287), FLYING (PILOT).

(Posthumous)

(Effective date of the award : 4th April, 1988)

On the 4th April, 1988, Wing Commander Daljit Singh nhas was flying Hunter MK 56 aircraft. On the final proach for landing, the aircraft flamed out without war- ig at the very low and critical height of 200 feet. He lised that he had to eject immediately if he had to have n a very slender chance of survival. Also as a dedicated icer, he realised that were he to do so, his aircraft would all probability crash into village Asnabani which was t ahead on the approach. This brave officer chose to y with the aircraft for a few seconds longer to control and ensure that the village was safe. He ejected but it is too late as his aircraft was already too low for any ance of survival.

He would have been fully justified in ajecting from the craft earlier than he did to save his life. His deliberate cision to stay with his crippled aircraft and sacrifice his vn life rather than risk those of others, point to his im- ense bravery far beyond the call and honour of duty. The preme sacrifice so deliberately and coolly made by him a situation of extreme distress and crisis will, for ever be. example for others to emulate.

Wing Commander Daljit Singh Minhas, thus, displayed nspicuous courage, a high degree of professionalism and nse of duty in grave distress leading to his making the preme sacrifice, in the finest traditions of the Air Force.

9. SHRI ARVIND D. HEGDE, UTTARA KANNADA, KARNATAKA.

(Posthumous)

(Effective date of award : 19th April, 1988)

On receiving information on the night of the 19th April, 988, that forest produce was going to be smuggled by a ang of smugglers from the Reserve forests in Hulekal ange of Sirsi Forest Division in Uttara Kannada District, ri Arvind D. Hegde, Range Forest Officer, Hulekal Range as instructed to intercept smugglers and apprehend them ith the help of his staff. Shri Hegde erected a roadblock ith boulders on the road passing from the reserve forests ith a view to stop the lorry and to apprehend the smugglers. t about 3.30 a.m. on the 20th April, 1988, they noticed a rry loaded with forest produce approaching them. Dis- garding the signal given by the Range Forest Officer to stop. ne lorry broke through the barricade and sped away. The ange Forest Officer with his staff chased the lorry in his ehicle and tried to shoot at the tyres of the lorry but missed. he lorry was chased and finally stopped near the house of ne Shri Neelakanta Hegde, a resident of Sirsi town and who is known to be an influential and notorious smuggler f forest produce.

When the staff of the Range Forest Officer were persua- ding the smugglers to alight and give up resistance, the river of the lorry on the pretext of turning off the head- ights, got back into the driver's seat and suddenly started driving away with a view to escape. Although this sudden novement left rest of staff unaware, Shri Hedge showed promptitude and jumped on the front bumper of the lorry nd tried to get in. The smugglers, who were 10 in number n board the lorry, attacked Shri Hegde and beat him while the lorry was moving away. The brave officer was lone to death while discharging his duty.

Shri Arvind D. Hegde exhibited the most exemplary courage, utmost devotion to duty and made the supreme sacrifice for the protection of forest produce.

10. G/128826-Y. OEM SATEY SINGH.

(Effective date of the award : 17th June, 1988)

Operator Excavating Machinery Satey Singh of 153 For- mation Cutting Platoon of BRO. was deployed as Dozer Operator in formation cutting at Hunli-Anini Road. The formation cutting site has a vertical steep hard rock on the hill side and a sheer drop of about 300 metres on the valley side which makes the drilling as well as dozer operation extremely difficult and dangerous.

On the 17th June, 1988, at about 1340 hours, while ope- rating his dozer in clearing the blasted hard rock and blast debris, OEM Satey Singh heard whistles warning the opera- tor to reverse as boulders had started rolling from the hill side. At that moment, the dozer was approximately 200 metres ahead from its safe parking place. Satey Singh started reversing the dozer to take it to a safer place. Suddenly, a few big boulders rolled from the hill side and rolled down the valley side just missing the dozer by a couple of feet. At that moment, OEM Satey Singh could have easily jumped out from the dozer and rushed for his safety, but in disregard to his personal safety, he did not jump out of the dozer but kept on reversing to save the dozer from getting hit by big boulders rolling from the hill side. In the process of reversing the dozer, one boulder hit his left leg with considerable force. Due to the sudden impact, OEM Satey Singh became unconscious and fell down from the dozer. After a minute or two, he regained his cons- cious and looked at the dozer which was still in a start position but was not moving. He noticed that his left leg was bleeding profusely due to multiple fracture. Without losing time, he again jumped on the operator's seat of the dozer in that condition and started reversing the dozer to the safer place. This all he was doing by holding his fractured leg by one hand and operating the dozer with just one leg and one hand. OEM Satey Singh ultimately got back the dozer to the safer place and then, again fell unconscious on the dozer itself. Subsequently, he was immediately evacuated for further treatment under danger- ously ill condition to Army Base Hospital.

OEM Satey Singh, thus, displayed cool courage and ex- ceptional devotion to duty in saving the dozer at grave risk to his own life.

11. SHRI AJIT KUMAR DOVAL, KAKA NAGAR, NEW DELHI.

(Effective date of the award : 26th January, 1989)

Shri Ajit Kumar Doval was given several sensitive assignments directed against certain hard core terrorists. These assignments required a high degree of courage and dedication. It also put his personal security in peril. Re- gardless of the risk to his personal safety, Shri Doval pre- pared and executed plans against terrorists with a high degree of success bringing glory to his organisation. During these assignments, there were long periods during which his whereabouts were not known which even caused concern that he has been caught and possibly tortured.

In one such assignments, he was required to deal with a group of terrorists, some of whom were considered notori- ous and dangerous. Dealing with them posed a grave danger to his own life. Ignoring the risk involved to his personal security, Shri Doval prepared and executed a plan for enti- cing the terrorists and succeeded in trapping some of the wanted notorious terrorists. In carrying out these assign- ments, Shri Ajit Kumar Doval has not only exhibited remarkable resourcefulness and devotion to duty, but he has carried out his task with a single mindedness of purpose and shown exemplary courage even risking his life on several occasions.

No. 25-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Shaurya Chakra's to the undermentioned persons for acts of galantry :—

1. EX-HAVILDAR MOHAN SINGH,
GANDHI NAGAR,
DELHI.

(Effective date of award : 28th March, 1984).

On the 28th March, 1984, Shri Harbans Singh Manchanda, the then President of Delhi Sikh Gurdwara Committee was going to Gurdwara Sis Ganj in a car driven by Ex-Havildar

Mohan Singh. The car stopped at Tilak Marg crossing near Tilak Bridge, New Delhi. All of a sudden, two armed terrorists appeared and fired at Shri Manchanda injuring him seriously. The car driver, Ex-Havildar Mohan Singh tried to catch them but one of them fired at him and he was injured in the neck. Both Shri Manchanda and Ex-Havildar Mohan Singh were taken to the Lok Nayak Jai Prakash Narain Hospital where Shri Manchanda was declared dead and Ex-Havildar Mohan Singh was admitted and operated upon.

Ex-Havildar Mohan Singh displayed exemplary courage and devotion to duty of a high order while grappling with two armed terrorists in a bid to apprehend them, unmindful of the grave danger involved to his own life.

2. SHRI RANBIR SINGH BIST, (*Posthumous*)
TEHRI-GARHWAL,
UTTAR PRADESH.

(*Effective date of award*: 25*th May*, 1984)

On the 25th May, 1984, a devastating fire engulfed the Sowam Civil Forest Plantation in the Soklana Range of Tehri-Garhwal. Shri Ranbir Singh Bist who was a Culture Jamadar in that Range, tried to put out the fire cutting fire line for two hours on end. However, due to strong wind, he could not contain the spread of the fire and in the process he was himself surrounded by fire and fell on the ground unconscious. A forest guard and a Nepali worker who had rushed to the scene immediately on hearing of it, extricated him from fire and got him admitted in the Narendra Nagar State Hospital where after struggling with death for 6 hours, he succumbed to his injuries. It was due to the untiring efforts of Shri Bist that the fire was brought under control, thus, averting the danger to a nearby cow-enclosure and adjacent villages.

Shri Ranbir Singh Bist displayed exemplary courage and devotion to duty of the highest order and in a bid to control the devastating fire in the forest range, sacrificed his own life.

3. SHRI NARAIN PRASAD DUBE, (*Posthumous*)
SHIVAJI NAGAR,
BHOPAL,
MADHYA PRADESH.

(*Effective date of award*: 13*th February*, 1985)

On the night of the 13th February, 1985, one Shri Arun Kumar Mehra sighted a thief trying to enter the house of his neighbour in Shivaji Nagar, Bhopal. He came out and raised an alarm to which Shri Narain Prasad Dube, residing nearby responded and joined Shri Mehra in nabbing the burglar. While Shri Dube was trying to intercept the burglar alongwith Shri Mehra, the burglar fired from his revolver at Shri Dube who some-how managed to escape. This, however, could not stop Shri Dube from chasing the burglar. He grappled with the burglar and tried to overpower him. In this process, the burglar again fired three shots one of which hit Shri Dube injuring him seriously. He was taken to hospital but succumbed to his injuries.

Shri Narain Prasad Dube, thus, exhibited exemplary courage and civic sense of a very high order and in his successful attempt to prevent the robbery in his neighbour's house, lost his own life.

4. SHRI RAJKUMAR PANJWANI, (*Posthumous*)
BOMBAY,
MAHARASHTRA.

(*Effective date of award*: 4*th March*, 1986)

On the 4th March, 1986, at noon, three unidentified persons in their late twenties entered the Bandra Branch of the Bank of Bombay. While one of them entered into the Branch Manager's cabin and threatened to shoot the Acting Manager, another positioned himself at the counter near the entrance. The third robber went to the bank's gunman at the cash counter and sought to disarm him. A scuffle ensued between the gunman and the miscreant. A customer namely, Shri Rajkumar Panjwani who had come to the bank to transact business, intervened to help the gunman. Some staff members of the Branch also threw ledgers, chairs, etc., at the miscreant. On seeing the commotion, the robber who was standing near the other end of the counter, drew out a revolver and fired at Shri Panjwani and also at the gunman injuring both of them. The other robber who was in the Branch Manager's cabin came out and also fired, injuring another member of the staff. The Cashier in the meantime pressed the burglar alarm and all the three men fled-away the Branch without taking any cash and escaped in an unnumbered car. Shri Panjwani who was in a serious condition died on way to hospital.

Shri Rajkumar Panjwani, thus, displayed exemplary courage in foiling the robbery attempt at the cost of his own life.

5. T/NO. 2514 CP LABOURER KANCHA LOPCHAN.

(*Effective date of award*: 8*th January*, 1987)

CP Labourer Kancha Lopchan was employed by 88 Road Construction Company Project Vartak of BRO as a sentry. On the 8th January, 1987 at about 0800 hours, while Shri Lopchan was performing sentry duty at KM 102.3 on Hunli-Anini Road where formation cutting work was in progress, he saw small stones falling from the hill side. Seeing impending disaster of a massive land slide, he immediately raised an alarm for the people working on the lower slopes to move away from the area. As soon as he did this, the slide came down. The labourers who had heard him had by then manged to move away to safer area. Shri Lopchan alongwith a colleague, thereafter got himself involved in removing the equipment lying on the upper slopes and partially buried under the slide debris to safety. While doing so, whereas the bulk of the equipment was removed, one Compressor which was hit by a boulder could not be extricated in spite of his best efforts and was lost.

CP Labourer Kancha Lopchan, thus displayed conspicuous courage and devotion to duty at grave risk to his own life and saved costly equipment.

6. T/No. 1566, CP LABOURER RAM BAHADUR.

(*Effective date of award*: 8*th January*, 1987)

CP Labourer Ram Bahadur was employed with 88 Road Construction Company Project Vartak of BRO on road Hunli-Anani on sentry duty.

On the 8th January, 1987, at about 0800 hours, he observed movement of some small stones from the hill side. He felt that massive land slide, was probably in the offing. He immediately raised an alarm and called upon the people who were working on the lower slopes to get away and run for their safety. Soon the hill side completely gave way and the debris started falling where the was standing. Labourers working down below had, however, not yet heard his alarm. Undeterred by the movement of the slide he continued to shout until the men moved out and thereafter ran back and started extricating costly equipment and stores lying at the work site at grave risk to his life. While doing so even though he was struck by a stone, he removed bulk of the equipment to safety.

CP Labourer Ram Bahadur, thus, exhibited courage, presence of mind and promptitude in saving the lives of about 150 labourers and also valuable equipment of the Organisation at grave risk to his own life

7. SHRI NAWAL KANT,
ALIGARH,
UTTAR PRADESH.

(*Effective date of award*: 9*th May*, 1987)

On the night of 9th May, 1987, at about 9.30 p.m. a gang of dacoits entered into the house of Shri Birendra Kumar of Mohalla Hakim Sarai, P. S. Vanna Devi, Aligarh, UP and tried to loot his house. Shri Birendra Kumar raised an alarm to which his neighbours including Shri Nawal Kant, Shri Girish Chand and Shri Pradeep Kumar responded and rushed to the spot and confronted with the dacoits, who were armed with lethal weapons. In complete disregard of the danger to their own life the neighbours of Shri Birendra Kumar gave a good fight to the dacoits. In the process some of them inluding Shri Nawal Kant were seriously injured. But undeterred by the injuries, they continued grappling with the armed dacoits and their indomitable courage and dare devilry led to the apprehension of the five dacoits and foiling of the robbery attempt. Unfortunately, Shri Nawal Kant who had been seriously wounded, later succumbed to the injuries.

Shri Naval Kant exhibited exemplary courage and gallantry of the highest order in encountering with the armed dacoits and made the supreme sacrifice in saving the life and property of his neighbour.

8. SHRIMATI RANO,
PETIAN WALA,
PUNJAB.

(Effective date of award : 22nd May, 1987)

On the 22nd May, 1987, at 8.30 p.m. Shri Madan Lal and his brother Shri Subhash Chander, residents of P.O. Rahimwad, Dera Baba Nanak were sitting in their shop in the village when three extremists namely Nishan Singh, Dhira and Jagir Singh (later identified) came to the shop. Nishan Singh who was armed with SBBL gun fired thrice at Subhash Chander who died immediately. Jagir Singh also started firing with his revolver. Shri Madan Lal without carring for the safety of his life, grappled with Jagir Singh and caught hold of him. On hearing the bursts of gun firing, Shrimati Rano w/o Shri Madan Lal and one Shri Ayoob Masih rushed to the spot. While two of the extremists, Nishan Singh and Dhira managed to escape, Shrimati Rano, with the help of her husband, succeeded in apprehending the third extremist Jagir Singh who was handed over to the local police.

Shrimati Rano, thus, displayed courage of a high order and unmindful of the grave risk to her own life encountered with the armed extremists and was instrumental in apprehension of one of them.

9. SHRI JAGDISH SHARMA,
TOPA COLLIERY,
BIHAR.

(Effective date of award : 4th June, 1987)

On the 4th June, 1987 at about 1.15 p.m., a gang of 6-7 dacoits equipped with fire arms and lethal weapons entered the Topa Colliery Branch of State Bank of India in Bihar. Shri Jagdish Sharma, the bank's guard on duty at the entrance of the bank was attacked by the dacoits. He was hit in the leg by a bullet, stabbed and also hit on the head with a gun butt. However, showing exemplary courage and unmindful of the risk to his own life, Shri Sharma singlehandedly fought for the safety of the Bank's property and life of others and shot the leader who later succumbed to injuries.

Shri Jagdish Sharma, thus, exhibited conspicuous courage and a deep sense of responsibility endangering his own life and succeeded in foiling the attempted dacoity at the Bank.

10. SHRI VIJAY KUMAR PANDEY,
RAJOURI GARDEN,
NEW DELHI.

(Effective date of award : 11th June, 1987)

On the 11th June, 1987, at about 8.30 p.m., Shrimati Mamta Chadha, a resident of Rajouri Garden was travelling on a cycle rickshaw on her way back from Moti Nagar. The rickshaw was stopped by two youngsters in their midtwenties near the Govt. Sr. Sec. School, F-Block, Rajouri Garden and one of them caught hold of the gold chain from the neck of Shrimati Chadha. When she raised an alarm, the culprit took out a knife.

On hearing the alarm, Shri Vijay Kumar Pandey, residing nearby came out and rushed to the spot and grappled with the culprits. The culprits attacked him with knife and hit him 2-3 times on the stomach and managed to escape. Shri Pandey was admitted in Rana Nursing Home and was under treatment for a week. Later on, both the culprits were arrested and the gold chain they had snatched away was recovered. Because of injuries sustained by him, Shri Pandey had to forego IAS examination for which he was preparing.

Shri Vijay Kumar Pandey, thus, displayed exemplary courage and a rare sense of service and chivalry in saving the life and property of a woman at grave risk to his own life.

11. SHRI V. CHIDAMBARAM,
COIMBATORE,
TAMIL NADU. (Posthumous)

(Effective date of the award : 14th July, 1987)

On the 14th July, 1987, while Shri V. Chidambaram, a Forest Ranger in the Tamil Nadu Forest Department alongwith seven other forest officials were engaged in detecting a case of poaching in Gunderipallam area of Kongarpalyam beat of Sathyamangalam Range, they encountered with a gang notorious for poaching of elephants and smuggling of sandalwood. During the encounter, Shri Chidambaram was shot-dead from a close range by the notorious leader of the poachers.

Shri V. Chidambaram, who was a brave and efficient officer of the State Forest Department and who had been successful in the detection of many forest offences, finally sacrificed his life in protecting the endangered species of Flora and Fauna.

12. 1461937 LANCE NAIK OEM UTTAM KUMAR BASU
(Posthumous)

(Effective date of the award : 25th August, 1987)

Lance Naik OEM Uttam Kumar Basu of 1647 Par Coy of BRO was deployed to operate on dozer for formation cutting on Kawlkulh-Minibung Road in Mizoram.

During the then monsoons, long spell of heavy rains and fog deteriorated the normal condition of working on formation cutting/widening causing lot of danger and enormous risk of land-slides, loose boulders and shooting stones. Lance Naik Basu operated his dozer under such challenging situation even though having lot of risk to his own life. On the 25th August, 1987, While engaged on widening a portion of the road, all of a sudden, soil mixed with boulders collapsed from the hill side and buried him underneath the dozer and he succumbed to his injuries.

Lance Naik OEM Uttam Kumar Basu displayed exemplary courage, determination and a sense of commitment under hazardeous and trying conditions in the highest tradition of the BRO.

13. IC-81018 SUBEDAR MAJOR DEVENDRA PAL TYAGI.
(Posthumous)

(Effective date of the award : 10th September, 1987)

Subedar Major Devendra Pal Tyagi of 1638 Pioneer Company of BRO was entrusted with the supervision of concreting work at Akon site where a Bailey Suspension Bridge was under construction.

At about 1645 hours on the 10th September, 1987, a huge mass of hill side suddenly gave way descending on the personnel of Pioneer Platoon working on the lower slopes. On hearing whistles blown by the alarm sentries, Subedar Major Tyagi immediately realised the danger to the life of his men working below. Sensing serious trouble, he with total disregard to his safety, ran to his men and exhorted them to run to a place of safety. He personnily ensured that all personnel including labour moved away from the danger zone. In doing so, it became too late for him to get away himself and he was buried under a large mass of falling landslide. Though he was rescued promptly from beneath the debris, he suffered fatal internal injuries as a result of which he expired in hospital the very same day.

Subedar Major Devendra Pal Tyagi, thus, showed conspicuous courage, extreme devotion to duty and concern for the life of fellow employees and in the process sacrificed his life in the best tradition of the Force.

14. SHRI KALACHAND SAIKAR,
BARPETA,
ASSAM.

(Effective date of the award : 10th November, 1987)

On the 10th November, 1987, Shri Kalachand Saikar, a grass cutter employed with the Assam Forest Department in the Manas Tiger Reserve had gone into the deep forest along

with Shri Kiran Chandra Barman, Mahawat, to retrieve a departmental elephant. All of a sudden, a tiger charge at Shri Barman from behind and grabbed him by his neck and shoulders and after pinning him down on the ground, tried to drag him away. In the process Shri Barman was seriously injured. Shri Sarkar without least fear and concern for his own life, charged at the tiger and dealt several blows on its head with a small khukri in his possession. The tiger finally let go of Shri Barman and vanished in the forest. Shri Barman was then escorted to the Beat Office at Uchile by Shri Kalachand Sarkar where he got medical attention.

Shri Kalachand Sarkar, thus, showed gallantry and presence of mind of a high order in the moment of crisis and saved the life of his colleague from the tiger at grave danger to his own life.

15. G/160273-F OEM SATYAPAL SINGH NEGI. (Posthumous)

(Effective date of the award : 20th January, 1988)

OEM Satyapal Singh Negi of 390 Road Maintenance Platoon of BRO was deployed to operate dozer on road Rishikesh-Joshimath on formation cutting work for widening and strengthing of the road.

On the 20th January, 1988, blasting was carried out in the afternoon and subsequently dozer operated by OEM Satyapal Singh Negi was clearing the debris. At about 1545 hours, a huge mass of hard rock lossened by blasting started sliding down from top of the hill. Sensing imminent danger to life and Govt. property, OEM Negi gave a warning shout to the men to run away to safety and at the same time endeavoured to steer his dozer away from the path of the falling rocks. Although he could manage to move his dozer to a comparatively safer place he was struck by a huge rolling boulder on his chest, which knocked him down and he finally succumbed to his injuries.

OEM Satyapal Singh Negi displayed commendable courage and outstanding devotion to duty amidst heavy odds and laid down his life in the finest tradition of the Force.

16. G/149773-Y DRIVER MECHANICAL EQUIPMENT ANAND SINGH RANA. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 1st February, 1988)

Driver Mechanical Equipment Anand Singh Rana of 153 Formation Cutting Platoon of BRO was deployed with dozer on formation cutting on road Walong-Chingwanti.

On the 1st February, 1988, when he was clearing the debris after blasting had been carried out, suddenly a whirlwind struck the work site. Due to the tremendous force of whirlwind, loose earth mass and boulders from hill side started falling down without giving any reaction time to the staff deployed there. DME Anand Singh Rana realising the grave situation firstly cautioned all by shouting to run for safety and then drove his dozer forward as he know that if he takes his dozer in the reverse, the boulder are sure to fall on top of the dozer which would smash the engine completely, though there were good chances for DME Rana to escape with minor injuries, if he had done so. But not caring for his personal safety and exhibiting exemplary courage and presence of mind, he moved the dozer forward to take it under a overhanging rock portion which would save the dozer from major damages. While he was moving dozer forward a big boulder directly hit DME Rana and killed him on the spots.

Driver Mechanical Equipment Anand Singh Rana displayed courage, devotion to duty and bold initiative under trying circumstances in saving life of others and Govt. property and in the process laid down his life in the finest tradition of the Force.

17. G/163008W SUPERINTENDENT BUILDINGS AND ROADS GRADE II JAI PRAKASH SHARMA.

(Effective date of the award : 12th February, 1988)

On the 12th February, 1988 at about 1000 hours, the BRO Camp at Km 32 on Imphal-Jiribam Road under 1352 Garrison Engineer (BRO) surrounded, raided and ransacked by a gang of hostiles and undesirable elements. They were carrying lethal weapons. The road on either side of the Camp was blocked by the hostiles so as to ensure smooth operation.

The Camp-in Charge, Supdt. B/R Gde II Jai Prakash Sharma of 490 Road Maintenance Platoon under 1352 Garrison Engineer (BRO) was checking the explosive magazine when the hostiles raided the Camp. The hostiles mercilessly and brutally beat up all the BRO and casual paid labourer. They damaged the buildings and set on fire the vehicle parked in the Camp. Not losing his presence of mind, Shri Sharma immediately reacted and locked the door of the magazine. After terrorizing and spreading panic in the Camp, the hostiles turned to Shri Sharma with the objective of looting explosive dump. Shri Sharma was beaten up mercilessly and threats to his life were pronounced. Inspite of their best efforts, Shri Sharma did not give in. He stood his ground with total disregard for personal safety and life. The undesirable elements had to give up in front of unyielding and courageous Shri Jai Prakash Sharma. Thus, the explosive dump was saved from looting.

Superintendent Buildings and Roads Grade II Jai Prakash Sharma, thus, demonstrated courage and devotion to duty of a very high order at the grave risk to his own life.

18. GO-1684-N ASSISTANT ENGINEER (E&M) VINOD KUMAR KATNA.

(Effective date of the award : 23rd March, 1988)

Assistant Engineer (Elect & Mech) Vinod Kumar Katna of 168 Formation Cutting Platoon Care 118 Road Construction Coy of BRO was Officer-in-Charge for snow clearance during December, 1987 to April, 1988, at North Pullu at a height of 15500 feet on Leh-Chalunka Road, a strategic road leading to Nubra Valley and Siachen Glacier. Due to continuous and heavy snow fall during the month of March, 1988 and first week of April 1988, the Khardungla Pass and a portion of the road got blocked and a detachment at a height of 18000 feet was cut off and could be contacted neither by road nor by air for six days as there was no let up on the weather conditions. There was shortage of ration and kerosene oil in the detachment and also a couple of persons were sick. At such critical juncture, Assistant Engineer (Elect & Mech) Vinod Kumar Katna with a team of 4 local labours, traversed the snow covered mountains on foot from 16000 feet to 18000 feet covering an uphill distance of 5 Kms and delivered the essential supplies to the detachment amidst snow blizzards without caring for the personal safety and comfort. The replenishment was continued for three days i.e. 23rd, 24th and 25th March, 1988. This boosted the morale of the isolated jawans.

Assistant Engineer (Elect & Mech) Vinod Kumar Katna displayed courage, determination and devotion to duty under heavy odds.

19. G/156960-A SUPERINTENDENT ELECTRICAL/MECHANICAL GRADE II KOCHOOR RAMAN MOHANAN.

(Effective date of the award : 19th April, 1988)

Superintendent Electrical/Mechanical Grade II Kochoor Raman Mohanan of 88 Road Construction Company of BRO was deployed to supervise the work of formation cutting team on road Hunli-Anini in Eastern Sector.

At about 1400 hours on the 19th April, 1988, when the formation cutting was in progress on a steep rocky patch, Supdt. Mohanan observed that the forward most driller was feeling frightened and shaky as there was hardly and space available to stand properly to carry out drilling operation. Shri Mohanan immediately rushed near the driller and tried to boost up his morale by operating the jack hammer himself while doing so, one small boulder rolling down from the hill side slightly hit Shri Mohanan. He knew it was an indication for a bigger slide, but displaying cool courage and presence of mind, he kept himself calm. He immediately directed the entire team to move out to a safer place and himself kept on drilling on that point to avoid any panic amongst his personnel. Shri Mohanan with utter disregard to his personal safety and displaying excellent leadership, ensured that all his men and costly drilling equipments were moved to safety, but in the process he got hit by a big boulder and rolled down on the steep valley side where he was stuck in between big boulders. He was recovered from underneath the boulders by the operators/casual labourers in a severely injured state.

Superintendent Electrical/Mechanical Grade II Kochoor Raman Mohanan, thus, displayed conspicuous bravery, excellent leadership and presence of mind at great risk to his own life.

20. SHRI JASBIR SINGH, JALLANDHAR, PUNJAB
(*Posthumous*)

(Effective dated of the award : 2nd August, 1988)

On the 2nd August, 1988 at about 10 a.m., as Shri Jasbir Singh, Branch Manager, Sahal Quazian Branch (District Jallandhar). Punjab & Sind Bank reached the bank branch and parked his motorcycle in front of the bank building, two robbers wearing turbans, presumably terrorists, pounced upon him from behind. They dragged him inside the bank asked him to open the cash safe and hand over the cash to them. At that time he had two sets of keys; one belonging to the cash safe and the other for a safe which did not contain the cash. He cleverly hid the keys of cash safe in one hand and used the other set of keys to open the cash safe. These keys did not fit in, and the cash safe lock did not open. Seeing the delay, the robbers got angry and shouted at him asking why the cash safe did not open. Shri Jasbir Singh told them that to open the cash safe another set of keys was required and that was with the Head Cashier who had not come to the bank and in the absence of the Head Cashier he could not open the cash safe by himself. Frustrated in their attempt to get the cash safe out, one robber who was holding the pistol at his neck fired and Shri Jasbir Singh dropped down dead on the spot.

Shri Jasbir Singh, thus, displayed presence of mind and exemplery courage of the highest order in foiling the bank robbery at the cost of his own life.

21. SHRI RAJINDER SINGH, JALLANDHAR, PUNJAB.

(Effective date of the award : 2nd August, 1988)

On the 2nd August, 1988, in the early morning Shri Jasbir Singh, Branch Manager, Sahal Quazian Branch of Punjab & Sind Bank came to the house of Shri Rajinder Singh, Clerk-cum-Cashier, working in the same Branch and handed over to him one set of cash safe keys saying that since he had to go to some other branch he would not be coming to the office. Shri Rajinder Singh came to the office and placed the cash keys in the drawer of his desk. At about 10.00 a.m. he saw two turbaned youth apparently terrorists dragging the Branch Manager inside the bank. Pointing a pistol on his neck one of the dacoits ordered the Branch Manager to open the cash safe. With a view to hoodwinking the dacoits the Branch Manager applied the wrong set of keys to the lock of the cash safe and explained to the dacoits that for opening the lock he needed the second set of keys which was with the Head Cashier, who had not come to the Bank. Exasperated the dacoit who was pointing the pistol on the neck of Shri Jasbir Singh pressed the trigger and the Branch Manager collapsed dead on the ground.

The reaction time left for Shri Rajinder Singh was only a few seconds. If he was a weak man he would have cooperated with the dacoits and offered to give them the second set of keys which he had hidden in the drawer. But realising the high stakes involved he decided not to inform the dacoits about the second set of keys and the fact that the Manager had applied the wrong set of keys to the cash safe. Hardly any time had lapsed before both the dacoits opened fire and short Shri Rajinder Singh four times near the head and shoulders. He collapsed and dropped on the ground feigning dead. The terrorists thinking that he had died left the place in a hurry.

Shri Rajinder Singh showed exemplarly courage and presence of mind in foiling the bid for looting the bank cash.

No. 26-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of the 'Param Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Ashoke Kumar Chatterjee (IC-6008), VSM, Infantry.
2. Lieutenant General Raj Mohan Vohra (IC-6121), MVC, Armoured Corps.
3. Lieutenant General Lakshman Singh Rawat (IC-5316), AVSM, Infantry (Retired).
4. Lieutenant General Vijay Kumar (IC-5319), Army Service Corps.
5. Lieutenant General Diwan Siri Ram Sahni (IC-7314), SM, Engineers.
6. Lieutenant General Sushil Kumar Pillai (IC-7325), Infantry.
7. Lieutenant General Satish Kumar Bahri (IC-6117), Artillery.
8. Lieutenant General Krishan Dass Kapur (MR-0610), Army Medical Corps (Retired).
9. Vice Admiral Ravi Prakash Sawhney (00136 H).
10. Vice Admiral Radhey Shyam Sharma, AVSM, VSM, (60027 Z).
11. Vice Admiral Jagat Narayan Sukul, AVSM (50027 Y).
12. Air Marshal Pirthi Singh, AVSM, VM & Bar (4480) Flying (Pilot).
13. Air Marshal Mohinder Singh Bawa, AVSM, VM (4494) Flying (Pilot).
14. Air Marshal Gursharan Singh, AVSM, VM, VSM (4263), AE(M) (Retired).
15. Air Vice Marshal Denzil Keelor, KC, AVSM, Vr. C. (4805) Flying (Pilot).

No. 27-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Bar to Param Vishisht Seva Medal' to the undermentioned person for distinguished service of the most exceptional order :—

Major General Naresh Kumar (IC-5844), PVSM, Artillery (Retired).

No. 28-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of the : Ati Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Major General Ashwani Kumar Dewan (IC-7024; Vr. C., Armoured Corps.
2. Major General Vijay Kumar Madhok (IC-6132), VSM, Infantry.
3. Major General Prem Lal Kukrety (IC-8104), SM Infantry.
4. Major General Sher Amir Singh (IC-8401), Infantry.
5. Major General Yashwant Deva (IC-6640), Signals.
6. Major General (Mrs.) Nirmal Ahuja (MR-1172), VSM, Army Medical Corps (Retired).
7. Major General (Local) Velacheri Jagadesan Sundaram (IC-10586), VSM, Electrical and Mechanical Engineering.
8. Brigadier Ashok Bhan (IC-12876), Infantry (Posthumous).
9. Brigadier Sushil Kumar Nanda (IC-11039), Infantry.
10. Rear Admiral Pallassana Parameswara Iyer Sivamani, NM (00279 H).
11. Rear Admiral Kankipati Appala Satyanarana Zagapathi Raju, NM (00304 R).
12. Rear Admiral Bimalendu Guha (00317 Y).
13. Rear Admiral Jagdish Jnardan Baxi, VSM (50085 B).
14. Commodore Adolph Britto, VSM (40143 H).
15. Commodores Verghese Koithara, VSM (60086 H).
16. Commodore Purshottam Dutt Sharma, NM (00429 Z).
17. Commodore Perinkulam Krishnaiyer Ramaswamy (70061 B).
18. Captain Srinivasa Varadachari Gopalachari, VSM (00713 W), Indian Navy.
19. Air Marshal Amarjit Singh Chahal (MR-586), VSM, Army Medical Corps.

20. Air Vice Marshal Om Parkash Suri (4784), Medical.

21. Air Vice Marshal Keshava Chander Sharma (4932), Aeronautical Engineering (Mechanical).

22. Air Vice Marshal Pratap Rao, VM (5188), Flying (Pilot).

23. Air Commodore Hamid Mohammad Shahul, VSM (5461), Flying (Navigator).

24. Air Commodore Manmohan Waman Desai, VSM, (5524), Accounts.

25. Air Commodore Harjit Singh Ghuman, VM, (5692), Flying (Pilot).

26. Air Commodore Dalip Singh Dahiya (5866), Flying (Pilot).

27. Air Commodore Vinod Kumar Verma, VM (6528), Flying (Pilot).

28. Air Commodore Philip Rajkumar, VM (6748), Flying (Pilot).

No. 29-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Bar to Ati Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Major General Nirmal Sondhi (IC-6130), AVSM, Artillery (Retired).
2. Brigadier Dhruba Jyoti Mukherjee (MR-1002), AVSM, VSM, Army Medical Corps.
3. Air Commodore Prithvi Singh Brar, AVSM, VM (6007), Flying (Pilot).

No. 30-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Sarvottam Yuddh Seva Medal' to the undermentioned officer for distinquished service of the most exceptional order :—

Lieutenant General Amarjit Singh Kalkat (IC-7347), AVSM, VSM, Infantry.

No. 31-Pres/89.—The President is pleased to approve the award of 'Uttam Yuddh Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Major General Shrikrishna Chidambar Sardeshpande (IC-7899), AVSM, Infantry.
2. Acting Rear Admiral Premvir Saran Das, VSM (00393 T).
3. Commodore Sundaram Padmasankar (00485 A).
4. Captain Kamal Shamsher Rai (00613 T), Indian Navy.
5. Air Commodore Manmohan Singh Vasudeva, VM (6128), Flying (Pilot).

The 30th March 1989

No. 32-Pres./89.—The President is pleased to approve the award of 'Maha Vir Chakra' to the undermentioned person for acts of conspicuous gallantry :—

Colonel Vijay Kumar Bakshi (IC-16709), (*Posthumous*) 6/8 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 2nd March, 1989)

One company group of 6/8 Gorkha Rifles was operating on search and destroy mission under the command of Colonel Vijay Kumar Bakshi on 2nd March, 1989. The company encountered militants' camp in general area of Nayaroo lagoon in the Wanni sector. This contact which initially started as an exchange of fire involving firing by the militants from multiple directions turned into a prolonged engagement lasting over twenty four hours. In the whole action, Colonel Bakshi personally led his troops courageously and in a bold manner despite being injured early. He refused to break contact with the militants and continued to press forward notwithstanding the heavy odds. Through personal example and brave actions, Colonel Bakshi ensured continued pressure on the militants despite being cut off which resulted in infliction of extremely heavy damage and casual on militants. Finally he received a fatal bullet injury a breathed his last

Throughout the operation, Colonel Vijay Kumar Baks displayed conspicuous courage, determination and valia combat leadership in the face of the militants

No. 33-Pres/89.—The President is pleased to approve th award of 'Vir Chakra' to the undermentioned person for ac of gallantry :—

5746182 Havildar Guman Singh Gurung, (*Posthumous* 6/8 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 2nd March, 1989)

One company group of 6/8 Gorkha Rifles was operatin on search and destroy mission under the command of Colone Vijay Kumar Bakshi on 2nd March, 1989. The company encountered militants' camp in general area of Nayaroo lagoor in the Wanni sector. This contact which initially started a an exchange of fire involving firing by the militants from multiple directions turned into a prolonged engagement last ing over twenty four hours. Havildar Guman Singh Gurung was Radio-Operator of the Commanding Officer. Despite being seriously injured on way, he not only continued to pro vide communication but also killed 3-4 militants at close range. He acted in complete disregard to his own safety and life and set personal example of the highest order. Finally, he was fatally hit by militants' fire at colse range and breathed his last.

Throughout the operation, Havildar Guman Singh Gurung displayed conspicuous courage and valour in the face of the militants.

S. NILAKANTAN, Director

PLANNING COMMISSION

New Delhi, the 24th October 1988

No. A-19(533)/88-Adm.II.—The President is pleased to terminate the services of Shri Bhupinder Singh Salva, a probationary Senior Research Officer in the Planning Commission posted in the Power and Energy Division of this Commission, with immediate effect.

M. N. VARADARAJAN, Under Secy.

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

New Delhi, the 13th March 1989

CORRIGENDUM

No. E-11015/36/88-Hindi.—In the Ministry of Information and Broadcasting's Resolution of even number dated 24-2-1989 the name of Shri Keshav Pandey, Retired Director General, AIR at Serial No. 10 may be read as "Shri Keshav Pandey, Retired Deputy Director General AIR" and the name of Shri Dwarika Prasad G. Ved at Serial No. 15 may be read as "Shri Dwarkadas J. Ved" respectively.

B. K. ZUTSHI, Jt. Secy.

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 14th March 1989

No. Q-16011/1/88-FSA(WE).—In pursuance of Rule 3-A read with Rule 4(*iii*) of the Rules and Regulations of the Central Board for Workers Education, the Government of India hereby appoint Smt. Kushal Singh, IAS, Executive Director, Central Social Welfare Board, Jeewan Deep, Sansad Marg, New Delhi, as a coopted member on the Central Board for Workers Education for a period of one year with effect from 27th October, 1988.

A. K. CHANDA, Dy. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS DELHI, 1989